तापमान
अधिकतम 27 .5 डिग्री
न्यूनतम 12 .5 डिग्री

हरिभूमि
हिसार भूमि
रोहतक, रविवार, 2 मार्च 2025

09 डीसी ने दिए निर्देश, एसडीएम भी रखेंगे बोर्ड परीक्षा पर नजर

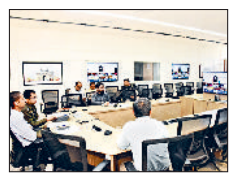

10 मरम्मत कार्य के चलते जिंदल ओवरब्रिज बंद होने से लोगों को हो रही परेशानी

खबर संक्षेप

दो पिस्तोल व पांच जिंदा कारतूस सहित एक काबू

हिसार। अवैध हथियार रखने वालों पर कार्रवाई करते हुए स्पेशल स्टाफ टीम ने कैमरी रोड गंगवा से एक युवक को काबू कर दो अवैध पिस्तोल और पांच जिंदा कारतूस बरामद किए हैं। मुख्य सिपाही विक्रांत ने बताया कि पुलिस टीम ने गश्त के दौरान सूचना के आधार पर कैमरी रोड गंगवा से एक युवक को काबू किया। पूछताछ में उसने अपना नाम आजाद नगर निवासी अंकित बताया। तलाशी लेने पर अंकित के कब्जे से दो अवैध पिस्तोल और पांच जिंदा कारतूस बरामद हुए। पुलिस रिकॉर्ड के मुताबिक आरोपी पहले भी आपराधिक वारदातों में शामिल रहा है। आरोपी पर हत्या प्रयास सहित लड़ाई झगड़े के थाना सिविल लाइन हिसार और आजाद नगर में तीन केस दर्ज है।

सरेआम जुआ खेलते 3 काबू, 12400 रुपये बरामद

हांसी। थाना सदर पुलिस ने सरेआम ताश के पत्तों द्वारा जुआ खेल रहे 3 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपितों की पहचान कुलाना निवासी तेलूराम, सुरेश व सुनील के रूप में हुई है पुलिस को पकड़े गए आरोपितों के पास से 12400 रुपये की नगदी बरामद हुई।

पनिहारी से कॉलेज के लिए गई छात्रा गायब

हिसार। बरवाला क्षेत्र के गांव पनिहारी से 21 वर्षीय छात्रा के लापता होने का समाचार है। वह कॉलेज जाने की बात कहकर घर से निकली थी लेकिन वापिस नहीं लौटी। लापता छात्रा खेड़ी जालब स्थित गवर्नमेंट कॉलेज में बीए फाइनल ईयर में पढ़ती है। छात्रा के शाम तक घर न लौटने पर परिजनों ने कॉलेज में पता किया। वहां पता चला कि वह कॉलेज नहीं पहुंची थी। परिवार ने रिश्तेदारों और जानकारों से संपर्क किया, लेकिन कहीं कोई सुराग नहीं मिला। पिता रामनिवास ने बरवाला थाने में शिकायत दर्ज कराई है। उन्होंने गांव के ही एक युवक राजेंद्र पर बहला-फुसलाकर ले जाने का आरोप लगाया है। राजेंद्र का मोबाइल फोन भी बंद आ रहा है। पुलिस ने केस दर्ज करके छानबीन आरंभ कर दी है।

केंटर ने मारी कार को टक्कर, तीन घायल

हिसार। अग्रोहा के पास हुए हादसे में तीन युवक घायल हो गए। हादसा खड़ी कार को तेज रफ्तार केंटर द्वारा टक्कर मार देने से हुआ। कार सवार युवक फरीदाबाद से मलोट जा रहे थे। घायलों में दो की हालत गंभीर है। बताया जा रहा है कि पंजाब के मलोट निवासी 27 वर्षीय इंकु कुमार अपने भाई शिवम और दोस्त आशीष के साथ कार में सफर कर रहे थे। अग्रोहा मोड़ पर मन्नत होटल के सामने उन्होंने कार रोकी। शिवम लघु शंका के लिए उतरा था जबकि इंकु और आशीष कार में बैठे थे। एक आयशर कैंटर ने लापरवाही से गलत दिशा में आकर खड़ी कार को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में कार में बैठे इंकु और आशीष गंभीर रूप से घायल हो गए तथा कार भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। कैंटर चालक मौके से फरार हो गया।

मेयर के लिए 7 व पार्षद पद पर 116 प्रत्याशी आजमा रहे अपना भाग्य

शहर की छोटी सरकार को चुनने के लिए मतदान आज

■ 2 लाख 68 हजार 316 मतदाता चुनेंगे नगरीय सरकार

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

नगर निगम चुनाव के चलते रविवार को मेयर तथा पार्षद पद के लिए मतदान होगा। निगम क्षेत्र के 2 लाख 68 हजार 316 मतदाता मेयर के 7 तथा पार्षद पद के 116 प्रत्याशियों की तकदीर लिखेंगे। मतदाता सुबह 8 से सायं 6 बजे तक होगा। इसके बावजूद 6 बजे के बाद भी मतदाता मतदान के लिए लाइन में लगे हुए हैं तो उनका भी मतदान करवाया जाएगा। मतदान शुरू होने से पहले मॉक पोल करवाया जाएगा। जिला प्रशासन की ओर से मतदान की सभी तैयारियों पूरी कर ली गई है। देर सायं नगर निगम के 239 मतदान केंद्रों पर मतदान सामग्री के साथ 239 पोलिंग पार्टियों पहुंच गई। पोलिंग पार्टियों में कुल 1372 कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है। उधर, पुलिस की तरफ से मतदान केंद्रों पर सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध किए गए है। निष्पक्ष तरीके से चुनाव प्रक्रिया को संपन्न करवाने के लिए प्रशासन ने सेक्टर ऑफिसर व ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किए हैं।

हिसार। पोलिंग पार्टियों को आवश्यक निर्देश देते चुनाव पर्यवेक्षक आईएएस प्रभजोत सिंह व जिला निर्वाचन अधिकारी अनीश यादव व चुनावी सामग्री चेक करते हुए पोलिंग पार्टियां। फोटो : हरिभूमि

जिला निर्वाचन अधिकारी ने दिए आवश्यक निर्देश

नगर निकाय चुनाव को निष्पक्ष, पारदर्शी, व्यवस्थित एवं शांतिपूर्वक तरीके से संपन्न करवाने के उद्देश्य को लेकर चुनाव पर्यवेक्षक आईएएस प्रभजोत सिंह व जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त अनीश यादव ने आवश्यक निर्देश देकर दो मार्च को होने वाले मतदान के दृष्टिगत पोलिंग पार्टियों को मतदान केंद्रों के लिए रवाना किया। इस दौरान हिसार पुलिस अधीक्षक शशांक कुमार सावन, नगर निगम हिसार के रिटर्निंग अधिकारी हरबीर सिंह, अतिरिक्त निगमायुक्त शालिनी चेतल, चुनाव तहसीलदार जगदीप मान, पीपी सिंह तूर सहित तमाम सहायक रिटर्निंग अधिकारी भी मौजूद रहे। चुनाव पर्यवेक्षक आईएएस प्रभजोत सिंह ने शनिवार को नगर निकाय चुनाव क्षेत्रों की पोलिंग पार्टियों को दिशा-निर्देश देते हुए कहा कि चुनाव को हर हाल में निष्पक्ष एवं पारदर्शी तरीके से संपन्न करवाएं। किसी भी तरह की आपात परिस्थिति से निपटने के लिए सेक्टर अधिकारी, ड्यूटी मजिस्ट्रेट सहित तमाम अधिकारियों की ड्यूटियां लगाई गई हैं।

मेयर पद के लिए 7 व पार्षद पद के लिए 116 प्रत्याशी मैदान में

मेयर पद के लिए 7 तथा निगम के 20 वार्डों से कुल 116 प्रत्याशी मैदान में है। भाजपा ने मेयर समेत निगम के सभी 20 वार्ड में अपने प्रत्याशी चुनावी सिंबल पर उतारे हुए है, जबकि कांग्रेस ने मेयर तथा अलग-अलग कुल 12 वार्ड से ही पार्षद पद के लिए प्रत्याशियों को पार्टी सिंबल पर उतारा है। बाकी 8 वार्डों में कांग्रेस ने निर्दलीय प्रत्याशियों को समर्थन दिया है। मेयर पद के लिए भाजपा प्रत्याशी प्रवीन पोपली, कांग्रेस प्रत्याशी कृष्ण सिंगला टीटू, निर्दलीय प्रत्याशी गुरमीत सिंह, मीरा लोट, सुरेंद्र कुमार, सुरेंद्र भोरिया व होशियार सिंह में मुकाबला है। मुख्य मुकाबला भाजपा व कांग्रेस प्रत्याशी के बीच है।

हर पहलू पर रखेंगे नजर

मतदान प्रक्रिया को लेकर तैयारियां पूरी हैं। इसके साथ ही पोलिंग पार्टियों की रवानगी से लेकर बूथों तक पहुंचने और चुनाव संपन्न करवाने के बाद ईवीएम जमा करवाने तक हर गतिविधि पर पैनी नजर रखी जाएगी। किसी भी अनाधिकृत व्यक्ति को मतदान केंद्र के अंदर प्रवेश न होने दें। मतदान प्रक्रिया समाप्त होने के बाद सभी पोलिंग पार्टियां ईवीएम व अन्य मतदान से जुड़ी सामग्री को जमा करवाने के लिए पर्याप्त टेबल लगाई गई हैं।

-अनीश यादव, जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त

वार्ड	प्रत्याशी
1	सरोज जैन भाजपा, रेखा बंसल कांग्रेस, दीपिका,रेनु पंवार
2	मोहित नरेश सिंगल भाजपा, नरेंद्र कांग्रेस, ईशा गर्ग, तेजवीर सिवाच, डॉ. प्रदीप कोहली, रेनू , विनय मित्तल, हरीश
3	ज्योति वर्मा भाजपा, कुसुम प्रजापति कांग्रेस
4	हरि सिंह सैनी भाजपा, जतिन शर्मा कांग्रेस, सुरेंद्र सैनी, पंकज कुकरेजा ,शुभम, सुनील चौहान
5	भीम महाजन भाजपा, सौरभ पपरेजा, दिनेश, ललित भाटिया,
6	सुमित्रा भाजपा, शर्मिला कांग्रेस, अंजलि, ऊषा, कोमल सैनी, पूजा, बबीता, मीनू, सुनीता
7	मनोहरलाल भाजपा, भूप सिंह कांग्रेस, अंजू रानी, मंदीप, विजय, शिव कुमार, संदीप
8	राजेंद्र सैनी भाजपा, मन्नु अग्रवाल कांग्रेस, रवि सैनी जमालपुरिया, अतुल बांगा, नरोत्तम, मंगल, मधु, मनोज सिंधवानी
9	शीला भाजपा, लक्ष्मी रंगा कांग्रेस, अनिता, पिंकी, प्रियंका
10	साक्षी भाजपा, कविता कांग्रेस, कविता, ज्योति, पूनम, प्रीति, बिमला ,सुजीता ,सुमन
11	नरेश ग्रेवाल भाजपा, अनिल शर्मा, कपिल बेदी, कुलदीप, महाबीर, डॉ. सत्यवान सैनी
12	जगमोहन मित्तल भाजपा, जयकिशन, विकास शर्मा
13	संजय डालमिया भाजपा, उदयवीर मिंटू, राकेश आर्य
14	डॉ. सुमन यादव भाजपा, कृति, जन्नत पाहवा गांधी, पायल, सुमन श्योराण
15	संतोष सैनी भाजपा, गीता सैनी, लक्ष्मी
16	राजेंद्र बिडलान भाजपा, श्यामलाल कांग्रेस, आनंद प्रकाश , निर्मला ,मल्लिका, राजेंद्र ढाका ,विजय कुमार ,शिव दयाल, सुदर्शन
17	राजेश अरोड़ा भाजपा, विकास कांग्रेस, तेजस्वी मावलिया, मोहित परूथी, राजीव कुमार
18	गुलाब सिंह भाजपा, ओमप्रकाश ,चरणदास ,प्रवीण कुमार ,मनोज राणा, राजकुमार, विक्रमजीत सीमा रानी
19	पिंकी शर्मा भाजपा, सत्यवान पानू कांग्रेस, कुलदीप मुवाल ,जोगेंद्र सिंह, प्रवीण ढांडा, सुरेंद्र महालक्ष्मी
20	नवीन कुमार छोटू भाजपा, राजेश कुमार, सतीश

नगर निगम चुनाव से जुड़ी अहम जानकारी

कुल वोट 268316
पुरुष 14813
महिला 127501
थर्ड जेंडर 2
बूथ 239
वार्ड 20
मेयर पद के प्रत्याशी 7
पार्षद पद के प्रत्याशी 116
पुलिस जवान 1500
आरक्षित वार्ड का विवरण

श्रेणी	वार्ड
एससी	16 व 18
एससी महिला	9
बीसी ए	20
बीसी ए महिला	3
बीसी बी महिला	15
सामान्य वर्ग महिला	1, 6, 10 , 14
ओपन वार्ड	2, 4, 5, 7, 8,11, 12, 13,17,19

आज ईवीएम में कैद हो जाएगा प्रत्याशियों का भाग्य

नारनौंद। नगर पालिका चुनाव के चलते 2 मार्च को मतदान होगा। प्रशासन ने मतदान की सभी तैयारियां पूरी कर ली है। नारनौंद नगर पालिका में कुल 14081 वोट है। जिनमें 6702 वोट महिलाओं और 7378 वोट पुरुषों के हैं। एक वोट थर्ड जेंडर का है। कुल 16 वार्ड है और उनमें 53 उम्मीदवार पार्षद के लिए अपना भाग्य आजमा रहे हैं। नगर पालिका के चुनावी रण में 10 प्रत्याशी चेयरमैन पद के मुख्य दावेदार हैं। जिनमें रामकुमार गौतम के भाई भीमसेन गौतम, पूर्व पार्षद कुलदीप गौतम, शमशेर कूकन, सुरेश एमसी, आम आदमी पार्टी के मुकेश लोहान, अनुराधा, सुमन रानी, दिनेश व्यास, मनीष, प्रदीप गौतम हैं। रविवार को होने वाले मतदान के बाद 12 मार्च को मतगणना का कार्य होगा।

5 मिनट की ओलावृष्टि से गेहूं व सरसों को नुकसान

हिसार। बरवाला क्षेत्र के आधा दर्जन से अधिक गांवों में शुक्रवार को 5 मिनट तक जमकर ओलावृष्टि हुई। इससे गेहूं और सरसों की फसलों को भारी नुकसान होने का अनुमान है। ओलावृष्टि के साथ तेज हवाओं के कारण गेहूं की फसल बिछ गई। किसानों ने सरकार से मुआवजे की मांग की है। शुक्रवार को शाम सुलखनी, धांसू, बुगाना, राजली, खानपुर, सिंधड़, सिंघवा राघो समेत आसपास के गांवों में बारिश के साथ हुई भारी ओलावृष्टि व तेज हवा चलने के कारण किसानों की गेहूं की फसल तहस-नहस कर दी। किसानों ने बताया कि पहली बारिश आई फिर ओले गिरे, इसके बाद तेज हवा से गेहूं की फसल बिछ गई जिसे दाना खराब हो गया। गेहूं की बालियां टूट कर नीचे गिर गई। सरसों की फसल भी ओलों की चपेट में आ गई। धांसू के किसान रामप्रकाश बिश्नोई ने बताया कि उनके यहां पर गेहूं की फसल सरसों की फसल में ओले गिरे जिससे फसल बर्बाद हो गई। उन्होंने कहा कि अभी यह नहीं कह सकते कि कितना नुकसान हुआ है

हिसार। गेहूं की खड़ी फसल बनी बिछौना। फोटो : हरिभूमि

क्योंकि 3 दिन के बाद ही पता चल पाएगा की फसल कितनी बर्बाद हुई है। भारतीय किसान यूनियन के जिला अध्यक्ष कुलदीप खरड़ ने प्रशासन और सरकार से फसलों की गिरदावरी कराकर किसानों को मुआवजा देने की मांग की। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि जल्द राहत नहीं मिली तो किसान मुख्यालय पर प्रदर्शन करने को मजबूर होंगे।

उकलाना। खेतों में पलटी कार। फोटो : हरिभूमि

बारात में जा रही कार पलटी, पांच घायल

उकलाना। गांव साहू से किनाला मार्ग पर बारात में जा रही एक कार बेकाबू होकर खेतों में पलट गई। इस हादसे में कार में सवार पांच युवक घायल हो गए। उन्हें स्थानीय लोगों की मदद से अस्पताल पहुंचाया गया है। हादसा बीती देर रात हुआ है। जहां जांडली गांव के अंकित, साहिल और मोना समेत पांच युवक गांव पाबड़ा में एक बारात में शामिल होने जा रहे थे। साहू से किनाला की ओर जाते समय कार का संतुलन बिगड़ गया। वाहन सड़क से उतरकर नहरी खाल को पार करते हुए गेहूं के खेत में जा पलटा। हादसे में कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई।

सुरक्षा देने के नाम पर भयभीत करके 42 लाख ऐंठे, केस दर्ज

हिसार। जिले के अग्रोहा थाना क्षेत्र में सुरक्षा देने के नाम पर एक व्यक्ति से 42 लाख रुपये ठगने का समाचार है। आरोप है कि रायपुर निवासी संजय व उसके साथियों ने उसे भयभीत कर हथियारों के बल पर यह रकम ऐंठी। पुलिस को सूचना दे दी गई है। इस संबंध में मीरपुर गांव निवासी राजेश उर्फ धोलू ने पुलिस को शिकायत दी है। शिकायत में उसने बताया कि आरोपी संजय ने उसे फोन पर कहा कि जगदीश भड़िया उससे बदला लेने वाला है। इसके बाद संजय मीरपुर ने आकर उसे हिसार के सेक्टर-14 में धोलू चौधरी नामक व्यक्ति से मिलवाया। आरोपियों ने सुरक्षा देने के नाम पर पहले दो लाख रुपये लिए और फिर 9 लाख 80 हजार रुपये ऐंठ लिए। बाद में संजय ने और हथियार लाने और बुलेटप्रूफ जैकेट के लिए 6.5 लाख रुपये की मांग की, जिसे राजेश ने अपने जानकारों से दिलवा दिए। इसके बाद आरोपियों ने राजेश को धमकाकर और अधिक रुपए देने को मजबूर किया। गत 25 फरवरी को धोलू चौधरी अपने 6 साथियों के साथ हथियारों सहित उसके घर पहुंचा। आरोप है कि इन लोगों ने खेत में जाकर गोली चलाने की प्रैक्टिस की और फिर रात को राजेश को बंधक बनाकर 42 लाख रुपए ऐंठ लिए। राजेश का कहना है कि उसे जगदीश भड़िया से कोई खतरा नहीं था, लेकिन आरोपियों ने झूठी कहानी गढ़कर उसे डरा दिया।

बोर्ड परीक्षा में आउट ऑफ सिलेबस प्रश्न आने पर स्कूल संघ ने एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

■ संघ का दावा है कि दसवीं की गणित की परीक्षा में आए थे आउट ऑफ सिलेबस प्रश्न

हरिभूमि न्यूज ⏭हांसी

दसवीं की बोर्ड परीक्षा में आऊट आफ सिलेबस प्रश्न आने पर शनिवार को हरियाणा प्राइवेट स्कूल संघ हांसी ने उपप्रधान मनोज आहुजा के नेतृत्व में एसडीएम राजेश खोथ को ज्ञापन सौंपा।

हरियाणा प्राइवेट स्कूल संघ हांसी के प्रधान रविन्द्र अत्री ढंढेरी ने बताया कि एसडीएम खोथ को सौंपे गए ज्ञापन हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित कक्षा दसवीं की परीक्षा में गणित के पेपर पाठ्यक्रम से बाहर प्रश्न आने को लेकर ज्ञापन सौंप बच्चों को ग्रेस मार्क्स दिए जाने की मांग की गई है। स्कूल निदेशक अनिल कुमार ने बताया कि सितम्बर 2024 की परीक्षा में भी पैटर्न अप्लाई नहीं हुआ। पहली बार इस पैटर्न का पेपर आया जिससे विद्यार्थियों में भारी निराशा है। सतीश वर्मा ने कहा कि प्रश्न पत्र सैम्पल पेपर से मैच नही हुआ और ऐसे में 95 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी 70 प्रतिशत अंकों पर ही रूक जाएंगे।

प्राइवेट स्कूल संघ हांसी ने हरियाणा शिक्षा बोर्ड से आगामी पेपरों को निर्धारित पाठ्यक्रम अनुसार तथा परीक्षा के प्रिंट करवाए गए पेपरों की जांच करवाकर परीक्षा ली जाए तथा गणित के पेपर में आए आउट ऑफ सिलेबस के प्रश्नों के प्रत्येक विद्यार्थी को ग्रेस माक्र्स दिए जाए ताकि वे परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर सके और उनकी मेहनत का फल उन्हें मिल सके।

हांसी। शिक्षा बोर्ड के नाम एसडीएम राजेश खोथ को ज्ञापन सौंपते हरियाणा प्राइवेट स्कूल संघ के पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

मार्केट क्रैश
शंभू भद्र

अक्टूबर 2024 से अब तक निफ्टी हर महीने गिरावट में बंद हुआ और 5 महीने में यह 12 प्रतिशत गिर चुका

बाजार गिरे तब क्या करना चाहिए?

शेयर बाजार में आज गिरावट दर्ज की गई है। लगातार बाजार को गिरता देख निवेशक परेशान हो रहे है ऐसे में आपको बताते है बाजार की गिरावट के टाइम आपको क्या करना चाहिए। शेयर बेच देना चाहिए या एसआईपी बंद कर देना चाहिए या बाजार में टिके रहना चाहिए?

बाजार जब गिरता है तो निवेशकों को कुछ समझ नहीं आता है कि शेयर बेच दे, एसआईपी बंद करें या बाजार में टिके रहें। अक्टूबर 2024 से निफ्टी हर महीने गिरावट में बंद हुआ है और ये 5 महीने में 12 प्रतिशत गिर चुका है। 1996 के बाद ऐसा पहली बार हुआ है कि बाजार में लगातार पांच महीने गिरावट आई है। इससे पहले साल 1996 में जुलाई से लेकर नवंबर महीने के बीच बाजार में लगातार 5 महीने गिरावट देखी गई थी। इन 5 महीनों के दौरान निफ्टी 50 इंडेक्स 26 प्रतिशत गिरा था। अमेरिका से लेकर यूरोप तक में की गई एकेडमिक स्टडीज से पता चलता है कि जब भी लोग बाजार में निवेश को लेकर घबराएं या चिंतित रहते हैं तब-तब बाजार ने एवरेज से ज्यादा रिटर्न दिया है। इसका मतलब है जब भी आप सोचते हैं कि शेयर बेच देना चाहिए, एसआईपी बंद कर देना चाहिए और बाजार से निकल जाना चाहिए उस समय ही बाजार में निवेश का सबसे बेहतर समय होता है। साल 2008 में 21 जनवरी को सेंसेक्स एक ही दिन में करीब 1400 अंक गिर गया था। वहीं 2008 के अंत तक सेंसेक्स 20,465 अंक से गिरकर 9716 अंक पर आ गया। वर्ष 2010 सितंबर में सेंसेक्स फिर से 20,000 अंक को पार कर गया। इसके बाद 2020 में कोरोना महामारी के कारण एक हफ्ते में सेंसेक्स 42,273 अंक से गिरकर 28,288 अंक पर आ गया था। 2020 अप्रैल से इसमें रिकवरी देखने को मिली और सेंसेक्स वर्ष के अंत तक 47,751 के स्तर पर पहुंच गया। मतलब, जब-जब बाजार में गिरावट आई है इसमें तेजी से रिकवरी भी दिखी गई है। ऐसे में जो निवेशक पहले से इन्वेस्टेड है उन्हें अपने निवेश में वैसे ही बना रहना चाहिए और जो लोग नया निवेश करना चाहते हैं वह थोड़ा-थोड़ा करके निवेश कर सकते हैं।

शेयर बाजार लगातार क्यों गिर रहे?

विदेशी निवेशकों ने अक्टूबर 2024 से फरवरी 2025 तक पांच महीनों में भारतीय बाजार से 3.11 लाख करोड़ रुपए निकाल लिए हैं। इसके अलावा निवेशकों को चीनी कंपनियों के शेयर भारतीय कंपनियों के शेयरों की तुलना में ज्यादा सस्ते दिख रहे हैं। खाने-पीने की चीजें महंगी होने के कारण अक्टूबर 2024 में रिटेल महंगाई बढ़कर 6.21% पर पहुंच गई थी, जो महंगाई का 14 महीनों का उच्चतम स्तर था। खाने-पीने की चीजें सस्ती होने से जनवरी 2025 में रिटेल महंगाई घटकर 5 महीने के निचले स्तर 4.31% पर आ गई थी। लेकिन ये कमी निवेशकों का विश्वास बहाल करने के लिए काफी नहीं है। हाल के महीनों में देखा गया कि भारतीय अर्थव्यवस्था धीमी हो गई है। डोनाल्ड ट्रम्प की ट्रेड पॉलिसीज से निवेशक काफी चिंतित है। भारत सहित कई अन्य देशों पर रेसिप्रोकल टैरिफ लगाने की अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की धमकी से बाजार में अनिश्चितता दिखाई दे रही है। ट्रम्प ने बीते दिनों कहा था, चाहे वो कोई भी देश हो- भारत या चीन, वे हम पर जितना चार्ज करते हैं, हम भी उतना ही रेसिप्रोकल टैरिफ लगाएंगे, हम व्यापार में बराबरी चाहते हैं।

चीन की ओर रुझान

विदेश संस्थागत निवेशकों का निवेश चीन भी जा रहा है। चीन की सरकार ने पिछले साल देश की अर्थव्यवस्था का कायाकल्प करने के लिए बड़े निवेश का एलान किया था। इस निवेश के बाद एफआईआई चीन के बाजार में जाने लगे थे। यह दौर अभी भी जारी है। ट्रंप की जीत के बाद अमेरिकी बाजार दुनियाभर से निवेश आकर्षित कर रहा है। दूसरी तरफ संस्थागत निवेश के लिए चीन का बाजार एक मजबूत विकल्प के तौर पर उभरा है। चीन की सरकार के नए प्रयासों ने एक सकारात्मक भावना पैदा की है। चीन ने ब्याज दरों में कटौती की, मार्केट में पैसा डाला और अर्थव्यवस्था को स्थिर किया। इससे निवेशकों को कॉन्फिडेंस मिला है।

उथल-पुथल में अर्थव्यवस्था का हाल

भारत पर सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था का तमगा लगा रहेगा? गांवों की मांग और सरकार का जोर इसे बचा सकता है। तमाम बुरी खबरों के बीच भारत की अर्थव्यवस्था में हम कुछ अच्छे संकेत देख सकते हैं। वित्त वर्ष 2024-25 की अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में जीडीपी ग्रोथ 6.2 फीसदी रही, जो जुलाई-सितंबर तिमाही में 5.4% थी। अच्छे मानसून का इसमें बड़ा योगदान है, ग्रामीण इलाकों में लोगों के पास खर्च करने को पैसा आया है। सरकार ने भी खर्च में तेजी लाई है। पिछली तिमाही में हालात ठीक नहीं थे। शहरी मांग कमजोर थी। अप्रत्याशित रूप से शहरी इलाकों में लोगों के खर्च में कमी आई। पिछले साल चुनाव की वजह से सरकारी खर्च भी रुका था। एशिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में मंदी के बादल मंडराते हुए दिख रहे थे।

टैरिफ का मामला उलझा

5.4% ग्रोथ रेट सात तिमाहियों में सबसे कम था। वैश्विक स्तर पर परेशानियाँ कम नहीं हैं। अमेरिका के साथ टैरिफ का मसला उलझा हुआ है। ट्रंप प्रशासन टैरिफ की बात कर रहा है। इससे वैश्विक अनिश्चितता बढ़ी है। विनिर्माण और सर्विस सेक्टर पर असर पड़ा है। आने वाले दिनों में व्यापार, होटल और परिवहन में भी सुस्ती रह सकती है। रियल एस्टेट और फाइनेंशियल सर्विसेज भी कमजोर हैं। अब अच्छी बातों पर एक नजर डालते हैं तो कृषि क्षेत्र ने अच्छा प्रदर्शन किया। फसल अच्छी हुई। पिछले तीन महीनों में 4.4% की वृद्धि थी। केंद्र और राज्य सरकारें पूंजीगत व्यय (कैपिटल एक्सपेंडिचर) बढ़ा रही हैं। सड़कें, पुल और प्रोजेक्ट्स पर पैसा लग रहा है। इनसे अर्थव्यवस्था को सहारा मिल सकता है। रिजर्व बैंक ने हाथ खोले हैं। नीतिगत दरें घटाईं, तरलता (लिक्विडिटी) बढ़ाई। सख्त नियमों को टाला, पर 2025-26 में भी जीडीपी दर 7% से नीचे रहने का अनुमान है। अमेरिकी टैरिफ का असर छोटा होगा, पर कुछ सेक्टर्स को नुकसान होगा। विनिर्माण और सर्विसेज पर दबाव है। बजट में टैक्स राहत दी गई। इससे उपभोक्ताओं को फायदा होगा, पर वैश्विक चुनौतियाँ खत्म नहीं हुईं। तो क्या भारत पर सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था का तमगा लगा रहेगा? फिलहाल उम्मीदें कायम हैं।

ये तबाही कब तक जारी रहेगी?

मार्च में कुछ रिकवरी देखने को मिल सकती है। मैक्रोइकॉनमिक स्तर पर बेहतर खबरें आ सकती हैं और कुछ एफआईआईज भी भारतीय बाजार में लौट सकते हैं। अभी विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) द्वारा भारी बिकवाली, अमेरिकी बांड पर बढ़ती आय, रुपये में भारी गिरावट, तीसरी तिमाही के आय में सुस्ती और हाई वैल्यूवेशन ने हाल के महीनों में बाजार की धारणा को प्रभावित किया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से लिए गए टैरिफ को लेकर फैसले ने बाजार की दिशा-दशा बदली है। ऐतिहासिक रूप से मार्च का महीना तेजड़ियों के पक्ष में रहा है, यानी मार्च में शेयर बाजार अक्सर तेजी में रहा है। पिछले 15 सालों में बेंचमार्क इंडेक्स ने 10 बार पॉजिटिव रिटर्न दिया है और निवेशकों की कमाई कराई है। 30 साल पहले ही मार्च के दौरान तेजी रही थी। लंबी अवधि के नजरिए के हिसाब से अच्छे शेयरों को खरीद सकते हैं। वित्त वर्ष 26 में भारतीय इक्विटी बाजारों के लिए जोखिम और चुनौतियों को देखें तो भारत की विकास संभावनाएं आशाजनक हैं, पर जोखिम भी हैं। निकट भविष्य में बाजार में और कमजोरी नजर आ रही है। निफ्टी शॉर्ट टर्म में और गिरावट की उम्मीद की जा सकती है।

डावांडोल बाजार में क्या अपनाएं रणनीति

यह पूरा हफ्ता निवेशकों के लिए खराब गुजरा है। इसलिए जब गिरावट का दौर हो तो शेयर में निवेश के प्रति सतर्क रहना जरूरी है। एक शेयर ब्रोकर ट्रेडेड मूल्य पर धन कमाता है। इसलिए ज्यादातर ब्रोकरेज हाउस मुफ्त में सलाह दिया करते हैं। ध्यान रहे जब भी नुकसान होगा, आपका ही होगा। इस हफ्ते आपके निवेश की स्ट्रैटेजी क्या होनी चाहिए? अगर आप अपने धन से हाथ नहीं धोना चाहते तो कुछ बुनियादी नियमों का ध्यान रखें।

निवेश के लिए अपनाएं ऐसी स्ट्रैटेजी

ट्रेडर व निवेशक दोनों को अलग-अलग स्ट्रैटेजी अपनानी चाहिए। ट्रेडर है तो स्टॉपलॉस के साथ ट्रेड ले सकते हैं। गिरावट के माहौल का फायदा उठा सकते हैं। हालांकि ट्रेडरों को कम क्वांटिटी के साथ ट्रेड करना चाहिए। इस वक्त ट्रेडरों के लिए भी काफी मुश्किल भरा मार्केट है। निवेशक के लिए अच्छा है कि वह सीधे निवेश से बचें। एसआईपी जारी रखें। कम अग्रेसिव निवेशक थोड़ा इंतजार करें। बाजार में रिवर्सल के संकेतों का वेट करें। इस वक्त ट्रेडर व निवेशक दोनों संभल कर अपनी स्ट्रैटजी बनाएं। वारेन बफे के मुताबिक गिरते बाजार में निवेश करने का जोखिम उठाना चाहिए।

टिप्स का अध्ययन करें

लिटमस टेस्ट करें। आपके निवेश करने के पहले, किसी भी विश्लेषक की टिप्स का कुछ समय तक परीक्षण करें। उसके बाद ही फैसला करें। कई ब्रोकरेज हाउस अपनी बड़ी रिसर्च टीम का दावा करते हैं। उनकी रोजाना रिपोर्ट आती हैं। इनमें से कितनी सही रहती होंगी।

पहले रिसर्च करें, बाद में नहीं

निवेश के पहले शेयर के बारे में ठीक से रिसर्च करें। उस पर ब्रोकर से विस्तार से रिपोर्ट मांगें। लंबी अवधि की संभावनाएं अच्छी हों तभी निवेश करें। ट्रिगर प्राइस और टार्गेट प्राइस वाली टिप्स पर समय बर्बाद नहीं करें।

जो तेज चढ़ता है, तेज गिरता है

जब भी ऊंचाई पर कोई आंकड़ा देखा जाता है, उसमें प्रगति की बड़ी संभावना दिखाई देती है। लेकिन जब कोई शेयर काफी बढ़ चुका हो या किसी सेक्टर में काफी तेजी आ चुकी हो, सतर्क रहना चाहिए। ज्यादा पीई अनुपात का मतलब है कि भविष्य में प्रगति दर घटने वाली है।

समय नहीं है तो सिप से लगाएं धन

अगर आपके पास अपने पोर्टफोलियो में नए शेयर चुनने का समय नहीं है तो शेयर बाजार में सीधे धन नहीं लगाएं। सिस्टैमेटिक इनवेस्टमेंट प्लान (सिप) में निवेश से भी काफी मूल्य निर्मित किया जा सकता है।

अस्थिरता होने पर नहीं करें ये गलतियां

घबराकर बिकवाली ना करें

बाजार में अस्थिरता होने पर घबराहट में बिकवाली करने से बचें। यह सबसे पहला नियम है। कयासबाजी पर तुरंत प्रतिक्रिया करना हानिकारक साबित हो सकता है। आपको हमेशा यह बात देखनी चाहिए कि किसी शेयर की पिटाई क्यों हुई है? इसे देखते हुए ही किसी शेयर को बेचने का फैसला करना चाहिए। अगर आप गिरावट की वजहों से संतुष्ट नहीं हैं तो इस बात पर विचार करें कि क्यों आपने उस शेयर को खरीदा था। इससे आपको सही समीक्षा करने में मदद मिलेगी।

सिप को नहीं रोकें

आपका कुछ भी फैसला हो, लेकिन, म्यूचुअल फंड में सिप को रोकने की गलती कतई न करें। इससे सिप को लेने का मकसद विफल हो जाता है। बाजार में मंदी का दौर ही वह समय होता है जब आपको इनके साथ जरूर बने रहना चाहिए। इससे आपको अपने लंबी अवधि के लक्ष्यों को हासिल करने में मदद मिलती है। सिप को रोककर आप इक्विटी में चक्रवृद्धि ब्याज का लाभ खो देंगे। गिरावट के समय आपको कम कीमत पर ज्यादा यूनिटें खरीदने का मौका मिलेगा। बाजार के वापसी करने पर आप इसका फायदा उठा सकेंगे। लंबी अवधि में इक्विटी से सबसे अच्छा रिटर्न मिलता है। इसलिए इनके साथ बने रहने में समझदारी है।

सिर्फ गिरावट के समय नहीं खरीदें

केवल पिटे हुए स्टॉकों में पैसा लगाने में आप गलती भी कर सकते हैं। इस बात का अंदाजा लगा पाना बेहद मुश्किल है कि किसी कंपनी का निचला स्तर क्या होगा। इससे आप सही मूल्य को आंकने के चक्कर में बुरी तरह से फंस सकते हैं। नए निवेशकों को फाइनेंशियल सेक्टर के शेयरों से दूर रहना चाहिए। किसी कंपनी में निवेश करने से पहले उसके बुनियादी पहलुओं को देखना चाहिए। इस बात की भी जानकारी करनी चाहिए कि कंपनी का ट्रैक रिकॉर्ड कैसा रहा है। उसके रेवेन्यू, प्रॉफिट, प्राइस-टू-अर्निंग रेशियो और डेट-टू-इक्विटी रेशियो के बारे में जानकारी कर लेनी चाहिए। अगर आप खुद यह काम नहीं कर सकते हैं तो किसी प्रोफेशनल की सलाह लेनी चाहिए।

एक सेक्टर में लिवाली न करें

हमेशा डायवर्सिफिकेशन के बारे में सोचना चाहिए। कहते हैं कि एक टोकरी में सभी अंडों को रखना बड़े नुकसान को दावत दे सकता है। इसलिए गिरावट के समय अच्छे शेयरों में निवेश के मौके तलाशने चाहिए। केवल एक सेक्टर के शेयरों में ही दांव लगाने से बचना चाहिए।

कर्ज लेकर शेयरों में न लगाएं

कई लोग ज्यादा रिटर्न के लिए कर्ज लेकर शेयरों में लगा देते हैं इस तरह के निवेश के तरीके को मार्जिन इंवेस्टिंग कहा जाता है। बेशक इस तरह से अच्छा रिटर्न कमाया जा सकता है। लेकिन, इसमें नुकसान भी बहुत ज्यादा होता है। इस तरह के निवेश के तरीके से हमेशा ही बचना चाहिए। बाजार में अस्थिरता के वक्त तो और भी चौकन्ना हो जाना चाहिए।

इक्विटी एनालिसिस सीखना आसान

ऐसे कर सकते हैं शुरूआत

जब आप इक्विटी में निवेश करने जाते हैं तो सबसे मुश्किल काम एनालिसिस समझा जाता है। एक छात्र कॉलेज में स्टॉक मार्केट गेम्स खेला करता था। उन्हें इस गेम में मजा आया, लेकिन वह यह भी जानता था कि यह पैसा बनाने का भरोसेमंद तरीका नहीं है। उसके बाद वे इक्विटी एनालिसिस कॉम्पिटिशन में शामिल हुआ और उन्हें पता चला कि उस फोरम में जिन केस पर चर्चा हुई, वे बेहद पेचीदा थे। क्या किसी नए शख्स के लिए इक्विटी एनालिसिस शुरू करने का कोई आसान तरीका हो सकता है? अगर किसी ने फाइनेंस की पढ़ाई नहीं की है तो वह इक्विटी एनालिसिस सीखने की शुरुआत कैसे करे? आइए जानते हैं। इक्विटी एनालिसिस में कई फैक्टर्स शामिल होते हैं। इसमें आपको सूचनाओं का गंभीरता से विश्लेषण करना पड़ता है। हालांकि, बुनियादी कॉन्सेप्ट्स सिंपल और सीधे हैं। आपको यह देखना होता है कि कंपनी में ऐसी क्वॉलिटी है, जिससे उसका मुनाफा लंबे समय तक बढ़ता रहे? यह सबसे बड़ा सवाल होता है। अगर जो भी एनालिसिस करें, उससे यह पता चलना चाहिए। यह नए बिजनेस के लिए मार्केट ऑपर्च्युनिटी हो सकती है या प्रमोटर्स की समझदारी या प्रॉडक्ट्स तैयार करने का इनोवेटिव तरीका, जिससे कम समय में कंपनी बाजार के बड़े हिस्से पर कब्जा कर ले। इन सभी कामकाज का असर आखिरकार कंपनी के मुनाफे पर पड़ता है।

मार्केट मंत्र | बिजनेस डेस्क

ऐसे समझें

एक ऐसे बिजनेस की कल्पना करिए, जिसकी शुरुआत प्रमोटर्स ने अपने जेब से लगाए पैसे से की हो। इनवेस्टर्स को रिटर्न देने के लिए बिजनेस को एसेट्स की जरूरत पड़ेगी, जिससे वह कोई प्रॉडक्ट बना सके या सर्विस ऑफर कर सके। यह पैसा इस काम के लिए लगाया जाता है और इससे फिर आमदनी होने लगती है। एनालिसिस की शुरुआत इससे की जा सकती है कि कंपनी सेल्स से जो कमाई कर रही है, उससे मुनाफा होगा। टैक्स के बाद जो मार्जिन बचता है, वह इनवेस्टरों के लिए होता है। इसलिए सबसे पहले आपको इस आंकड़े पर नजर डालनी चाहिए। उसके बाद यह सवाल करना चाहिए कि सेल्स में कैसे बढ़ोतरी होगी? क्या कंपनी ट्रेडिंग बिजनेस से जुड़ी हुई है? क्या वह पैसों का इस्तेमाल सामान खरीदने के लिए करती है। इस स्टॉक के क्लीयर होने पर उसे मुनाफा होने लगेगा। कुछ कैपिटल बिजनेस की एसेट्स में ब्लॉक हो सकता है। हालांकि, एसेट्स से जितनी सेल्स हासिल होगी, इनवेस्टर्स का रिटर्न उतना ही अच्छा होगा।

ऐसे करें आकलन

मान लीजिए कि किसी बिजनेस की शुरुआत 100 रुपये से होती है। इस पैसे को फिक्स्ड एसेट्स, स्टॉक और मैटीरियल्स में लगाया जाता है। इससे फिर सामान तैयार किया जाता है। साल के अंत में 150 रुपये की बिक्री हासिल होती है, जिसकी लागत 125 रुपये रहती है। इसमें टैक्स के बाद 25 रुपये का मुनाफा होता है। ऐसे में इनवेस्टर्स का रिटर्न 25 पर्सेंट होगा। अब मान लीजिए कि उस कैपिटल से कंपनी को 300 रुपये की सालाना सेल्स हासिल होती है क्योंकि वह साल में दो बार उतना सामान तैयार करके बेचती है। तब इनवेस्टरों का रिटर्न दोगुना हो जाएगा। एक बिजनेस जो कैपिटल की मदद से अधिक सेल्स हासिल करता है और वह एसेट्स में पहले जितना ही इनवेस्टमेंट करता है तो शेयरहोल्डर्स को अधिक रिटर्न मिलता है। एसेट्स टु सेल्स टर्नओवर से इनवेस्टर्स का रिटर्न बढ़ता है। सेल्स-एसेट्स ऐसा डेटा है, जिससे इनवेस्टर को बिजनेस की एसेट प्रॉडक्टिविटी का पता चलता है।

कर्ज की समझ जरूरी

तीसरी चीज कर्ज है। अगर कोई बिजनेस कैपिटल पर 25 फीसदी का रिटर्न हासिल करता है, तो प्रमोटर्स 10 फीसदी पर कर्ज लेकर उसमें इनवेस्ट करना पसंद करेंगे। मान लीजिए कि बिजनेस में 50 फीसदी इक्विटी और 50 फीसदी बॉरोइंग है। तब क्या होगा? उस वक्त ब्याज चुकाने के बाद मुनाफा 25 रुपये से घटकर 20 रुपये रह जाएगा। हालांकि, 50 रुपये के इक्विटी पर 20 रुपये के रिटर्न 40 फीसदी होगा। यह पहले के 25 फीसदी रिटर्न से अच्छा है। इसलिए एसेट टु नेटवर्थ डाटा को भी देखना चाहिए। रिटर्न ऑन इक्विटी प्रॉफिट मार्जिन, सेल्स एसेट्स और एसेट्स नेटवर्थ से डिसाइड होता है।

इक्विटी के दम से पूरे करें सपने

किसी भी लॉन्ग टर्म इनवेस्टमेंट में रिस्क रिवॉर्ड रेशियो का ज्यादा झुकाव इक्विटी इनवेस्टमेंट की तरफ होता है। रिस्क फ्री फिक्स्ड इनकम इनवेस्टमेंट की श्रेष्ठता तब धरी-की-धरी रह जाती है, जब हमें समझ आता है कि जोखिम से आजादी दिखने वाली चीज असल में कुछ हाथ नहीं आने की आजादी है। ये बात हमें तब समझ आती है जब हम रियल, इन्फ्लेशन एडजस्टेड, टैक्स बाद रिटर्न पर गौर करते हैं। हम जैसे ही इक्विटी निवेश की अपरिहार्यता को स्वीकार कर लेते हैं, हमारे सामने तुरंत यह सवाल आता है कि यह मुश्किल काम किया कैसे जाए?

निवेश के दो तरीके

जिन लोगों ने पहले कभी शेयरों में निवेश नहीं किया है उनके लिए यह तय करना मुश्किल है कि शुरुआत कहां से की जाए। वैसे इक्विटी निवेश के दो तरीके होते हैं। एक तरीका यह है कि आप शेयरों का चुनाव और खरीद-फरोख्त खुद करें। दूसरा, इक्विटी फंड्स के जरिए निवेश करें। दोनों का अंतिम मकसद एक ही होता है- इक्विटी से सुपीरियर रिटर्न हासिल करना। हालांकि, दोनों एक्टिविटीज एक दूसरे से एकदम अलग हैं। अगर आप एक्सपर्ट नहीं हैं या इसके लिए ज्यादा वक्त देने को तैयार नहीं हैं तो खुद निवेश करने के बारे में सोचने का कोई फायदा नहीं। ऐसे में म्यूचुअल फंड्स बेहतर विकल्प होंगे। ऐसे कई लोग हैं, जो अपना पोर्टफोलियो खुद मैनेज कर रहे हैं और बेहतर रिटर्न पा रहे हैं। हालांकि, 100 में से 5 या 10 को कामयाबी मिल पाती है। इक्विटी म्यूचुअल फंड निवेश से इन दिक्कतों से छुटकारा पाया जा सकता है। इक्विटी निवेश का मूल मंत्र यह है कि आपकी नजर में कामयाब स्टॉक इनवेस्टिंग क्या है और इंफॉर्मेशन, एनालिसिस के आधार पर बनी निवेश योजना को अंजाम देने की क्षमता कितनी है। लेकिन म्यूचुअल फंड्स के जरिए इक्विटी निवेश के बहुत ज्यादा फायदे हैं। सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसमें अनुशासित डायवर्सिफिकेशन होता है। फंड मैनेजर्स संस्थागत दायरे में काम करते हैं जिसमें उन पर निवेश के कुछ नियम लागू होते हैं। इसमें पोर्टफोलियो डायवर्सिफाइड रहेगा और इंडिविजुअल शेयर, सेक्टर या स्टॉक टाइप को लगने वाले झटके से सुरक्षित रहेगा। दूसरा फायदा यह होता है कि इसमें छोटी रकम से निवेश शुरू किया जा सकता है। म्यूचुअल फंड्स में आप कुछेक हजार रुपये से शुरुआत कर सकते हैं। यह आसान भी होता है। इक्विटी फंड्स का एक और फायदा ये होता है कि लॉन्ग टर्म में इनसे ज्यादा रिटर्न मिलता है। शेयरों के अट्रैक्शन के हिसाब से सभी इक्विटी पोर्टफोलियो में उनकी कुछ खरीदफरोख्त होती है।

ये पांच खूबियां, तभी निवेश में कामयाबी

बिजनेस डेस्क

लोकप्रिय मान्यता के विपरीत, पैसे कमाने के लिए प्रतिभा और कौशल की उतनी जरूरत नहीं होती है जितना उस दिशा में आगे बढ़ने के लिए सही दृष्टिकोण का होना जरूरी होता है। आप शानदार रणनीतियां बनाते हैं, लेकिन उन पर अमल नहीं करते हैं तो आप ज्यादा कुछ नहीं कर पाएंगे। सफल निवेशक, अपने निवेश के मार्ग पर दृढ़ता और धैर्य के साथ आगे बढ़ते रहते हैं और लक्ष्य तक पहुंच कर ही मानते हैं। अगर आप भी निवेशक के तौर पर कामयाबी हासिल करना चाहते हैं तो आपे में पांच खूबियां जरूर होनी चाहिए।

पहले बचत, बाद में खर्च

सफल निवेशक महीने की शुरुआत बचत से करते हैं और खर्च बाद में करते हैं। पहले बचत करने से खर्च पर नियंत्रण रखने में मदद मिलती है। पैसे बनाने के लिए आपका भी पहला कदम यही होना चाहिए। आप ऑटोमैटिक तरीके से महीने की शुरुआत में ही अपनी बचत को लॉक कर सकते हैं। आप बैंक को आपके रेकरिंग डिपॉजिट अकाउंट या म्यूच्यूअल फंड एसआईपी के लिए हर महीने की शुरुआत में ही कुछ रकम काट लेने का स्थायी निर्देश दे सकते हैं।

उद्देश्य के अनुसार निवेश

व्यावहारिक लक्ष्य निर्धारित करना और उसी के हिसाब से निवेश करना एक और ऐसी ही खूबी है जो काफी फायदेमंद साबित होती है। इस बात पर ध्यान देते हुए कि संसाधन सीमित हैं, आपको अपने लक्ष्यों की प्राथमिकता के आधार पर रैंकिंग करनी चाहिए और अपने निवेश लक्ष्य के अनुसार निवेश साधनों का चयन करना चाहिए। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई, शादी-ब्याह और रिटायरमेंट की प्लानिंग जैसे लक्ष्य दीर्घकालिक होते हैं और इसके लिए आपको म्यूच्यूअल फंड्स और पीपीएफ जैसे साधनों में निवेश करना चाहिए। दूसरी तरफ, कार खरीदना या छुट्टी में घूमने जाना जैसे लक्ष्यों को पूरा करने के लिए लिक्विड फंड्स, रेकरिंग डिपॉजिट जैसे अल्पकालिक निवेश साधनों में निवेश किया जा सकता है।

जोखिम उठाने की क्षमता

सफल निवेशक जोखिम उठाने से घबराते नहीं हैं। अच्छा रिटर्न पाने के लिए आपको जोखिमवाले निवेश साधनों में निवेश करना चाहिए। अपना सारा पैसा किसी पारंपरिक संपत्ति में लगाकर आप ज्यादा मुनाफा नहीं कमा पाएंगे। यहां तक कि अधिकांश पारंपरिक संपत्तियों में भी थोड़ा-बहुत जोखिम तो होता ही है। ब्याज दरें समय-समय पर घटती-बढ़ती रहती हैं। उठाए जानेवाले जोखिम को किसी अच्छे रिस्क मैनेजमेंट प्लान की मदद से सुरक्षित किया जा सकता है।

निवेश में लाएं विविधता

अनुभवी निवेशक किसी एक एसेट पर ध्यान देने के बजाय अलग-अलग ऐसेट्स में निवेश करते हैं। उनका कहना है कि अपने सारे अंडे एक ही टोकरी में न रखें। अलग-अलग निवेश साधनों में अलग-अलग रिटर्न मिलने की संभावना रहती है और जोखिम भी अलग-अलग होता है। इक्विटी में बहुत अच्छा रिटर्न मिलता है लेकिन यह बहुत परिवर्तनशील होता है। ऋण निवेश साधनों (डेट इन्वेस्टमेंट इंस्ट्रूमेंट्स) में थोड़ा कम जोखिम होता है और कम रिटर्न मिलता है। दूसरी तरफ, रियल एस्टेट सम्बन्धी निवेश में कम जोखिम होता है और अच्छा रिटर्न भी मिलता है लेकिन इसमें लिक्विडिटी का अभाव होता है। इसलिए, पोर्टफोलियो बनाते समय किसी एक ऐसेट पर ध्यान देने के बजाय अलग-अलग ऐसेट्स में निवेश करना बेहतर होता है। इस तरह जोखिम भी कम हो जाएगा और रिटर्न से समझौता भी करना नहीं पड़ेगा।

पैसे निकालने की आदत छोड़ दें

अंतिम लेकिन बिल्कुल महत्वपूर्ण बात यह है कि आपको अपने निवेश के मामले में धैर्य रखना पड़ेगा। सफल निवेशक किसी के कहने पर या इधर-उधर की बातों या विज्ञापनों पर आंख मूंदकर भरोसा करके पैसे निकालने की गलती नहीं करते हैं। मच्योरिटी से पहले निवेश की रकम निकाल लेने से लक्ष्य आधारित निवेश का उद्देश्य पूरा नहीं हो पाता है। अपने निवेश पर अटल रहने के लिए निवेश के उद्देश्य को याद रखना जरूरी है। दीर्घकालिक निवेशों को अबाधित छोड़ देने पर अच्छा रिटर्न मिलने की संभावना रहती है। इसलिए समय से पहले अपने निवेश को भंजाने की गलती न करें।

सचेत रहते हुए रणनीति बनाएं, तभी गिरते बाजार में कमा पाएंगे निवेशक

अलर्ट | बिजनेस डेस्क

इस समय शेयर बाजार में लगातार गिरावट को दौर जारी है। ऐसे में निवेशकों को भी अलर्ट रहना होगा। भारतीय शेयर बाजार जबरदस्त हलचल से भरा हुआ है। निफ्टी 50 लगातार गिरावट के दौर से गुजर रहा है और अगर आगे भी यह ट्रेंड जारी रहा, तो यह 28 साल में अपनी सबसे लंबी गिरावट दर्ज करेगा। इससे पहले 1996 में ऐसी गिरावट देखने को मिली थी। निफ्टी लगातार पांच महीने तक गिरा है। लगातार गिरावट के इस माहौल में निवेशकों के मन में बड़ा सवाल है अब आगे की रणनीति क्या बनाई जाए, ताकि कुछ वसूली हो सके और निवेशक घाटे से उबर सकें। ऐसे में क्या करें, बाजार से बाहर निकलें? धैर्य बनाए रखें? (लेकिन कब तक?) या नए अवसरों की तलाश करें? इस रिपोर्ट में आपको ऐसे ही कुछ सवालों के जवाब मिलेंगे जो आपको बाजार की सही दिशा के बारे में जागरूक कर सकते हैं।

इस समय एक गिरावट तोड़ सकती है निफ्टी का 28 सालों का रिकार्ड

बाजार के आंकड़े किधर जा रहे

एक्सपर्ट्स की राय जानने से पहले बाजार की स्थिति पर एक नजर डालते हैं। निफ्टी पिछले साल सितंबर से गिर रहा है और इसमें लोअर टॉप-लोअर बॉटम पैटर्न बन रहा है। अक्टूबर 2024 से अब तक यह 11.7% गिर चुका है। फरवरी के पहले कुछ हफ्तों में ही इसमें 3% की गिरावट दर्ज हो चुकी है। सन 1990 के बाद से सिर्फ दो बार ऐसा हुआ है जब निफ्टी लगातार पांच महीने तक गिरा हो। पहली बार 1994-95 में जब यह 31.4% टूटा था और दूसरी बार 1996 में जब यह 26% गिरा था। मौजूदा गिरावट तुलनात्मक रूप से कम है, लेकिन चिंताजनक बनी हुई है। विदेशी निवेशकों की बिकवाली एक बड़ी वजह बन रहा है। अक्टूबर 2024 से एफआईआई (विदेशी संस्थागत निवेशक) 2 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा की बिकवाली कर चुके हैं। वैश्विक कारणों को हम नजरअंदाज नहीं कर सकते। चीन के बाजारों में जबरदस्त रिकवरी आई है, जिससे विदेशी निवेशक वहां शिफ्ट हो रहे हैं। इसके अलावा, अमेरिकी नीतियां भी उभरते बाजारों पर असर डाल रही हैं।

निवेशक क्या करें

एक्सपर्ट्स का मानना है कि मौजूदा गिरावट में सावधान रहने की जरुरत है मगर घबराने की जरूरत नहीं है, बल्कि यह एक रणनीतिक निवेश का अवसर भी हो सकता है। अब सवाल उठता है कि इस रणनीतिक निवेश की दिशा क्या होगी? हम ब्रोकरेज हाउस और एक्सपर्ट्स की राय के आधार पर इन्हें बिंदुवार रखते हैं।

निवेशकों के लिए धैर्य जरूरी

अगर आप लंबी अवधि के निवेशक हैं, तो आपको घबराने की जरूरत नहीं है। स्टॉक मार्केट में उतार-चढ़ाव सामान्य बात है। निफ्टी 50 का एक साल का फॉरवर्ड पी/ई अपने दीर्घकालिक औसत से नीचे कारोबार कर रहा है, जिसका मतलब है कि यह भविष्य में मजबूती पकड़ सकता है।

नई खरीदारी का सही समय

कुछ एक्सपर्ट्स का मानना है कि यह खरीदारी का एक अच्छा अवसर हो सकता है। एसबीआई सिक्योरिटीज सलाह देता है कि निवेशक बॉटम-अप स्टॉक-पिकिंग रणनीति अपनाएं और चरणबद्ध तरीके से उच्च गुणवत्ता वाले स्टॉक में निवेश करें।

ट्रेडर्स के लिए क्या रणनीति

अगर आप शॉर्ट-टर्म ट्रेडर हैं, तो यह समय सतर्क रहने का है, जानकारों का कहना है कि जब तक निफ्टी 22,850 के नीचे बना रहेगा, तब तक बिकवाली का दबाव रहेगा। गिरावट की स्थिति में 22,500-22,400 के स्तर तक जाने की संभावना है। ऐसे में ट्रेडर्स को स्टॉप-लॉस का सख्ती से पालन करना चाहिए।

टैक्स हार्वेस्टिंग का लाभ उठाएं

अगर आपने इस साल कुछ नुकसान उठाया है, तो आप इसे टैक्स बचाने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।एसबीआई सिक्योरिटीज का सुझाव है कि अगले पांच हफ्तों में टैक्स हार्वेस्टिंग रणनीतियों पर ध्यान देना चाहिए। यह लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेन टैक्स को संतुलित करने में मदद कर सकता है।

विदेशियों की रणनीति पर ध्यान दें

एक अन्य विशेषज्ञ के अनुसार, वर्तमान में 'भारत बेचो, चीन खरीदो' की रणनीति अपनाई जा रही है, लेकिन यह ट्रेंड हमेशा के लिए नहीं रहेगा। उभरते बाजारों में पैसा फिर से लौटेगा, और जब ऐसा होगा तो भारतीय शेयर बाजार को भी इसका लाभ मिलेगा।

कौन-से सेक्टर में निवेश करें

- आईटी सेक्टर : रुपये की कमजोरी के कारण आईटी कंपनियों को फायदा हो सकता है।
- बैंकिंग और फाइनेंस : मजबूत फंडामेंटल्स वाली कंपनियां इस गिरावट के बाद तेजी से उभर सकती हैं।
- रक्षा और मैन्युफैक्चरिंग : सरकार की मेक इन इंडिया पहल के कारण इन सेक्टर्स में ग्रोथ देखने को मिल सकती है।
- फार्मा और हेल्थकेयर : लंबी अवधि के लिए यह एक स्थिर निवेश विकल्प हो सकता है।

यह रखें ध्यान

कुल मिलाकर निफ्टी 50 ऐतिहासिक गिरावट के करीब जरूर है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि निवेशकों को घबराकर बाजार से बाहर निकल जाना चाहिए, यह एक ऐसा समय है जब सही रणनीति और धैर्य के साथ काम करने की जरूरत है। मार्केट एक्सपर्ट्स से मिली सीख यह है कि लॉन्ग-टर्म निवेशक गुणवत्तापूर्ण स्टॉक्स को होल्ड करें, शॉर्ट-टर्म ट्रेडर्स स्टॉप-लॉस के साथ चलें, और नए निवेशक चरणबद्ध तरीके से मजबूत कंपनियों में निवेश करें. बाजार में उतार-चढ़ाव हमेशा आते हैं, लेकिन स्मार्ट निवेशक वही होते हैं जो इन मौकों का सही इस्तेमाल करना जानते हैं।

खबर संक्षेप

4 को अम्बाला में श्रम मंत्री का आवास घेरेंगे निर्माण मजदूर

हिसार। निर्माण मजदूर सरकार से सुविधाएं मुहैया करवाने और समस्याओं को दूर करवाने तथा अन्य मांगों को लेकर अब 4 मार्च को अम्बाला में श्रम मंत्री का आवास घरेंगे। इसकी सभी तैयारी निर्माण मजूदरों ने कर ली है। भवन निर्माण कामगार यूनियन हिसार तहसील सचिव राकेश गंगवा और प्रधान लीलू राम जांगड़ा ने आरोप लगाया कि मौजूदा सरकार के दस सालों के राज में निर्माण मजदूरों को पंजीकरण व सुविधा समय पर नहीं मिल रही है। जिससे भ्रष्टाचार चरम सीमा पर पहुच गया है। सरकार ने बोर्ड के पैसों का दुरुपयोग करके झूठी वाहवाही लूटने का काम किया गया।

10वीं गणित विषय का पेपर बोर्ड लेवल का न आने से सदमे में विद्यार्थी

बरवाला। प्राइवेट स्कूल संघ हरियाणा ने दसवीं गणित विषय का पेपर बोर्ड लेवल से आउट आने पर शिक्षा बोर्ड व सरकार से तुरंत प्रभाव से संज्ञान लेकर बच्चों को राहत देने की मांग की है। संघ के प्रदेश अध्यक्ष सत्यवान कुंडू , पैटर्न तेलूराम रामायणवाला, प्रांतीय महासचिव पवन राणा व रणधीर पूनिया, सीनियर वाइस प्रेसिडेंट संजय धतरवाल व अशोक कुमार, प्रदेश सचिव प्रदीप पूनिया, उप प्रधान प्रशान्त तंवर व कुलदीप यादव, प्रेस सचिव राजबीर ढाका व शैलेंद्र शास्त्री ने कहा कि हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड द्वारा 28 फरवरी को कक्षा दसवीं की गणित विषय की परीक्षा ली गई जिसको लेकर परीक्षा केंद्रों पर बहुत से विद्यार्थी रोते हुए बाहर निकले।

गणित की परीक्षा को लेकर शिक्षा मंत्री तुरंत प्रभाव से लें संज्ञान

हिसार। सभी निजी स्कूलों के समन्वयक दलबीर पंघाल ने कहा कि हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की कक्षा दसवीं का गणित पेपर आउट ऑफ सिलेबस होने से परीक्षार्थी सदमे में हैं। 90 फीसद से अधिक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी 60 से 70 पर ही सिमट जाएंगे। ऐसे में गणित की परीक्षा को लेकर प्रदेश के शिक्षा मंत्री को तुरंत इस पर संज्ञान लेना चाहिए और परीक्षार्थी को राहत दे।

पुलिस ने चलाया स्पेशल अभियान, एक माह में पकड़े 31 बेल जंपर व उदघोषित

हिसार। विभिन्न आपराधिक मामलों में वांछित बेल जंपर व उदघोषित अपराधियों की धरपकड़ के लिए जिले में एक माह का विशेष अभियान चलाया गया। जिला पुलिस की अलग अलग टीमों ने पिछले एक महीने में 31 बेल जंपर व उद्घोषित अपराधी गिरफ्तार किए है। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि वांछित उद्घोषित एवं बेल जंपर आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए चलाए जा रहे अभियान के दौरान पुलिस की अलग-अलग टीमों ने सतर्कता से कार्रवाई करते हुए अभियान के दौरान विभिन्न अपराधिक मामलों में वांछित 31 आरोपियों को पकड़ने में कामयाबी हासिल की है। पकड़े गए अनेक आरोपी जघन्य किस्म के अपराधों में वांछित आरोपी थे।

'स्वर्णिम भारत अनुभूति मेला' में भारी संख्या में पहुंचे शहरवासी

मेले में दिखा आध्यात्म, ज्ञान व मनोरंजन का अनूठा संगम

जिंदल मॉडर्न स्कूल के बच्चों ने स्वागत नृत्य गीत गाकर रणधीर पनिहार का स्वागत किया।

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

हिसार। 'पिप स्ट्रैस ट्रैकर' मशीन पर तनाव का लेवल चैक कराती महिला। फोटो: हरिभूमि

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा शहर के पुराना गवर्नमैंट कॉलेज मैदान में आयोजित तीन दिवसीय 'स्वर्णिम भारत अनुभूति मेला' में दूसरे दिन काफी संख्या में लोग पहुंचे और आध्यात्म, ज्ञान व मनोरंजन के अनूठे संगम का लाभ उठाया। दूसरे दिन नलवा के विधायक रणधीर पनिहार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए जिन्होंने 'स्वर्णिम भारत अनुभूति महामेला' के सभी स्टॉल्स का अवलोकन किया। जिंदल मॉडर्न स्कूल के बच्चों ने स्वागत नृत्य गीत गाकर रणधीर पनिहार का स्वागत किया।

'पिप स्ट्रैस ट्रेकर' मशीन को लेकर दिखी उत्सुकता

मेले में तनाव को मापने वाली 'पिप स्ट्रैस ट्रेकर' मशीन भी लगाई गई, जो हमारे तनाव का स्तर बताती। मशीन को लेकर मेले में पहुंचे लोगों ने विशेष उत्सुकता दिखाई और मशीन के माध्यम से अपने तनाव के स्तर की जांच करवाई। हिसार केंद्र की संचालिका बहन बी.के. रमेश कुमारी ने बताया कि आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में हर व्यक्ति तनाव में है। वह जीवन में शांति सुकून चाहता है। तनाव से मुक्ति का एक ही रास्ता है वह ध्यान (मैडिटेशन) है। मेडिटेशन को दिनचर्या में अपनाकर जीवन में बदलाव लाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि मैडिटेशन के बाद तनाव का लेवल कितना कम हुआ। यह प्रैक्टिल में मशीनों द्वारा चैक किया जा सकता है। 'पिप स्ट्रैस ट्रैकर' मशीन द्वारा पहले तनाव का लेवल चैक किया जाता है फिर 30 मिनट के मेडिटेशन के अभ्यास के बाद इस मशीन के द्वारा दोबारा चेक किया जाता है जिससे साफ पता चलता है कि राजयोग अभ्यास (मेडिटेशन) से तनाव के लेवल में काफी कमी आती है।

लोगों ने 12 ज्योतिर्लिंग के किए दर्शन

मेले के दूसरे दिन भी काफी संख्या में लोग पहुंचे जिन्होंने मेले में आकर इसका अवलोकन किया। माइंड स्पा के प्रति लोगों में काफी रुचि दिखाई दी और उस स्टॉल पर काफी भीड़ रही। मेले में 12 ज्योतिर्लिंग की झांकी में लोगों ने 12 ज्योतिर्लिंग के दर्शन किए। विभिन्न रोगों के उपचार के लिए होम्योपैथिक चिकित्सा शिविर भी मेले में लगाया गया है जिसका लोग लाभ उठा रहे हैं। वहीं लोगों को राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास भी करवाया जा रहा है जिससे उन्हें तनावमुक्त रहने व आध्यात्म से जुड़ने माध्यम का मिल रहा है। इस अवसर पर हिसार केंद्र की संचालिका बहन बी.के. रमेश कुमारी, बी.के. अनिता, बी.के. इंदिरा, बरवाला से बी.के. सुमित्रा, भिवानी से बी.के. वंदना बहन व बी.के. महेश मंच पर उपस्थित रहे।

6 माह बाद भी बस स्टैंड का मरम्मत कार्य पूरा न होने से यात्री परेशान

हरिभूमि न्यूज ⏭मंडी आदमपुर

मंडी आदमपुर। बस स्टैंड पर मरम्मत के लिए तोड़े गए शौचालय की हालत।

आदमपुर बस स्टैंड का मरम्मत कार्य 6 माह बाद भी पूरा न होने से यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है तथा हर दम दुर्घटना का भय बना हुआ है। आदमपुर बस स्टैंड की मरम्मत के लिए लगभग 8 माह पूर्व सरकार द्वारा 30 लाख रुपये मंजूर किए गए थे ताकि मरम्मत कराई जा सके। उसके बाद मरम्मत कार्य का ठेका दे दिया गया, लेकिन 6 माह बाद भी मरम्मत कार्य पूरा नहीं किया गया है। मरम्मत के लिए शौचालयों, फर्श व छत को तोड़ दिया गया था ताकि इनकी रिपेयर हो सके। शौचालयों में तोड़ने के बाद जगह-जगह भवन निर्माण सामग्री सामग्री के ढेर लगे हुए हैं जिससे आवागमन में भारी परेशानी हो रही है। इसके साथ ही शौचालयों को तोड़ने के बाद सीवरेज का गंदा पानी बस स्टैंड के परिसर में भर गया है। इसके चलते गंदगी के मारे बुरा हाल है। स्टैंड पर कार्यरत कर्मचारी व वहां आवागमन करने वाले यात्री दोनों परेशान है।

मोटापा कई बीमारियों का मूल कारण

- आधार अस्पताल में मोटापे के विरुद्ध साइक्लोथॉन आयोजित

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

हिसार। आधार साइक्लोथॉन में भाग लेते प्रतिभागी। फोटो: हरिभूमि

आधार अस्पताल द्वारा मोटापा के विरुद्ध पैडल फॉर हेल्थ के तहत हिसार रोडीज़ एवं साइकिलिंग क्लब के सौजन्य से साइक्लोथॉन का आयोजन किया गया। इसका शुभारम्भ आधार अस्पताल के निदेशक डॉ. हरीश शर्मा ने डॉ. दीपक मित्तल, डॉ. दीपक नैन, डॉ. आयुष सिंगला आदि की उपस्थिति में हरी झंडी दिखाकर किया। मोटापे के विरुद्ध इस साइक्लोथॉन में डॉ. अरुण कुमार अग्रवाल, डॉ. नीरव जैन, शशि बलोदा, निशान्त मेहता, प्रीती मेहता, संजय, गौरव शर्मा, आदित्य, तुषार, राज चहल, अंकित, योगेश कपिल, सतीश शर्मा आदि सहित पचास से अधिक लोगों ने भाग लिया। यह साइक्लोथॉन आधार अस्पताल से शुरू होकर राजगढ़ रोड, कोर्ट काम्प्लेक्स, फव्वारा चौक, डाबड़ा चौक होते हुए आधार अस्पताल पर समाप्त की गई। रिफ्रेशमेन्ट के साथ प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। डॉ हरीश शर्मा ने मोटापा और उसके दुष्प्रभाव के बारे में अवगत कराया। उन्होंने कहा कि मोटापा कई बीमारियों का मूल कारण है। सही खान पान, तनाव मुक्त जीवन, नियमित व्यायाम एवं एक अच्छी लाइफ स्टाइल अपनाकर इससे निजात पाया जा सकता है।

दीक्षांत समारोह के उपलक्ष्य में रक्तदान शिविर कल

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

हिसार। गुजवि में जागरूकता रैली निकालते राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक।

गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में तीन मार्च को रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। विश्वविद्यालय में दस मार्च को दीक्षांत समारोह हो रहा है, जिसमें राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू मुख्यातिथि होंगी। दीक्षांत समारोह के उपलक्ष्य पर सामाजिक कार्य करने के उद्देश्य से इस रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर का आयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना के सौजन्य से एलजी इलेक्ट्रोनिक्स इंडिया एवं सक्षम भारती फाउंडेशन के सहयोग से किया जाएगा। शिविर के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए विश्वविद्यालय परिसर में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों द्वारा एक विशाल रैली निकाली गई एवं नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। अभियान की अध्यक्षता राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयक डॉ. अंजू गुप्ता ने की। डा. अंजू गुप्ता ने बताया कि इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने पूरे उत्साह के साथ रैली निकाली, जिसमें रक्तदान के महत्व को रेखांकित करते हुए प्रेरणादायक नारे लगाए गए। रैली विश्वविद्यालय परिसर के प्रमुख स्थानों से गुजरी, जिससे विद्यार्थियों में रक्तदान के प्रति जागरूकता बढ़ी।

किसानों को जागरूक करें वैज्ञानिक : प्रो. काम्बोज

- फसल विविधीकरण को अपनाकर किसान कृषि उत्पादन में कर सकते हैं बढ़ोतरी
- हकृवि के एग्रोनोमी रिसर्च फार्म पर खेत दिवस कार्यक्रम आयोजित

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

हिसार। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ वैज्ञानिक एवं अन्य अधिकारी।

एचएयू कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने वैज्ञानिकों से किसानों को उन्नत किस्म के बीजों, जैव उर्वरकों एवं टिकाऊ खेती की तकनीकों से अवगत करवाने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि किसानों को कम लागत में अधिक उत्पादन देने वाली फसलों तथा मृदा स्वास्थ्य सुधार के दृष्टिगत जैविक खेती की विधियों के बारे में जागरूक करने की जरूरत है। प्रो. बीआर काम्बोज शनिवार को एचएयू में एग्रोनोमी विभाग की ओर से सतत फसल उत्पादन में सस्य विज्ञान की भूमिका विषय पर आयोजित खेत दिवस कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि फसल विविधीकरण को अपनाकर किसान अपने कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी कर सकते हैं। खरपतवार, कीट व रोग नियंत्रण के बारे में किसानों को जागरूक करना चाहिए। उन्होंने एग्रोनॉमी विभाग के रिसर्च फॉर्म में गेहूं, सरसों, चना सहित विभिन्न रबी सीजन की फसलों पर चल रहे विभिन्न प्रयोगों का निरीक्षण किया व नवीनतम तकनीकों पर चल रहे शोध की प्रगति के बारे में जानकारी ली। उन्होंने उपरोक्त फसलों से संबंधित प्रयोगों के बारे में आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए। उन्होंने सभी विभागों को आपसी तालमेल के साथ कार्य करने की भी हिदायत दी।

जानकारी दी

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे अनुसंधान कार्यों, जलवायु परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा, पर्यावरण, नवीनतम तकनीकों सहित विभिन्न बिंदुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। विभागाध्यक्ष डॉ. संजय ठकराल ने विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। डॉ. दादरवाल ने बैठक में आए हुए सभी अधिकारियों का धन्यवाद किया। मंच संचालन डॉ. प्रवीन कुमार ने किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश यादव, दीन दयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र के निदेशक डॉ. अनिल यादव सहित अन्य सस्य वैज्ञानिकों ने भी भाग लिया। इस अवसर पर विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, वैज्ञानिक, अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

श्री श्याम बाबा का विशाल जागरण 8 को

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

हिसार। बैठक में मौजूद ट्रस्ट के पदाधिकारी। फोटो: हरिभूमि

मानव दिव्यांग परिषद ट्रस्ट की बैठक ट्रस्ट संचालक उदय भगाना की अध्यक्षता में ट्रस्ट के सातरोड़ स्थित दिव्यांग आश्रम में हुई। बैठक में आगामी 8 मार्च को ट्रस्ट की ओर से आयोजित किए जाने वाले वार्षिक श्री श्याम बाबा के जागरण की तैयारियों को लेकर विचार-विमर्श किया गया व रूपरेखा तैयार की गई। ट्रस्ट के जिला प्रधान सन्नी सातरोड़ ने कहा कि इस बार बाबा का विशाल जागरण आयोजित किया जाएगा जिसमें विभिन्न सुंदर-सुंदर झांकी लगाई जाएंगी तथा जागरण में जो भी दान राशि आएगी उसे आश्रम के निर्माण में लगाया जाएगा। ट्रस्ट संचालक उदय भगाना ने बताया कि इस बार श्री श्याम बाबा के जागरण के मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा के सुपुत्र संजीव गंगवा होंगे व अध्यक्षता कैट मार्केट के प्रधान सुरेश पूनिया की रहेगी। बैठक में मनदीप भगाना, संजय जुगलान, रोहित, सुलतान, रामधानी आदि मौजूद रहे।

गणित की परीक्षा में पाठ्यक्रम से बाहर के प्रश्न, ग्रेस मार्क्स देने की मांग

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

नरेन्द्र सेठी, प्रदेशाध्यक्ष

- ट्रस्ट ने बोर्ड के सचिव को पत्र लिखकर छात्रों के लिए ग्रेस मार्क्स देने की मांग की

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी की ओर से आयोजित दसवीं की गणित विषय की बोर्ड परीक्षा में पाठ्यक्रम से बाहर के प्रश्न पूछे जाने पर सर्व हरियाणा प्राइवेट स्कूल ट्रस्ट, हरियाणा ने कड़ा ऐतराज जताया है। इस संबंध में ट्रस्ट ने बोर्ड के सचिव को पत्र लिखकर छात्रों के लिए ग्रेस मार्क्स देने की मांग की है। ट्रस्ट के प्रदेशाध्यक्ष नरेंद्र सेठी ने शनिवार को बताया कि एक दिन पहले आयोजित गणित विषय की परीक्षा में कई ऐसे प्रश्न थे जो निर्धारित पाठ्यक्रम से बाहर के थे। इससे छात्रों को परीक्षा में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जिससे उनके परिणाम पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। बोर्ड से परीक्षा के कठिनाई स्तर की समीक्षा करने और प्रभावित छात्रों को ग्रेस मार्क्स देने की अपील की है। निष्पक्ष मूल्यांकन सुनिश्चित करने के लिए एक विस्तृत जांच और विश्लेषण करवाने की मांग भी की गई है। नरेंद्र सेठी ने उम्मीद जताई है कि हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड इस गंभीर मुद्दे को ध्यान में रखते हुए उचित निर्णय लेगा और छात्रों को न्यायसंगत राहत प्रदान करेगा।

नकल रहित बोर्ड परीक्षा करवाने के लिए ड्यूटी मजिस्ट्रेट भी लगाए

डीसी ने दिए निर्देश, एसडीएम भी रखेंगे बोर्ड परीक्षा पर नजर

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

हिसार। बैठक में अधिकारियों को निर्देश देते उपायुक्त अनीश यादव। फोटो: हरिभूमि

जिला उपायुक्त अनीश यादव ने बोर्ड परीक्षाओं के मद्देनजर निर्देश जारी किए हैं कि नकल रहित परीक्षा करवाने के लिए पुख्ता इंतजाम सुनिश्चित किए जाएं। इसके तहत जिले के सभी एसडीएम भी सक्रिय भूमिका का निर्वहन करेंगे।

सेंटर के आसपास तथा स्कूल की बाउंड्री वॉल के अंदर कोई बाहरी व्यक्तियों को जमावड़ा न लगने पाए। उपायुक्त ने यह निर्देश वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सभागार में अधिकारियों की बैठक लेते हुए दिए हैं। इससे पहले वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने भी बोर्ड परीक्षाओं को लेकर बैठक ली थी। बैठक के दौरान प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने प्रदेश के सभी उपायुक्त और पुलिस अधीक्षकों को इस बाबत निर्देश देते हुए कहा है कि सभी परीक्षा केंद्रों पर नकल रहित परीक्षा करवाना अधिकारी सुनिश्चित करें। उपायुक्त अनीश यादव के साथ हिसार के पुलिस अधीक्षक शशांक कुमार सावन भी मौजूद थे। इस बीच दोनों अधिकारियों ने जिला शिक्षा अधिकारी प्रदीप नरवाल से भी कई पहलुओं पर फीडबैक लिया।

पुलिस अधीक्षक शशांक कुमार सावन ने कहा कि बोर्ड की परीक्षाओं के मद्देनजर सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस बल की तैनाती हर परीक्षा केंद्र पर की गई है। अगर किसी सेंटर पर शरारती तत्व नकल इत्यादि करवाने की कोशिश करता है तो उसके खिलाफ सख्त कार्यवाही अमल में लाई जाएगी। उन्होंने इस संबंध में सेंटर पर तैनात पुलिसकर्मियों का ब्यौरा भी लिया है। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि नकल रहित परीक्षा करवाने के सरकार के उद्देश्य को हर हाल में पूरा किया जाएगा।

लापरवाही बर्दाश्त नहीं

उपायुक्त अनीश यादव ने जिला शिक्षा अधिकारी प्रदीप नरवाल को निर्देश दिए हैं कि तमाम परीक्षा केंद्रों का रिव्यू करें, अगर कहीं पुलिस बल की ज्यादा संख्या की जरूरत है तो उस बारे रिपोर्ट प्रस्तुत करें। उन्होंने कहा कि जिला के तमाम उपमंडल के अधिकारी भी रूटीन में परीक्षा केंद्रों का औचक निरीक्षण करेंगे। इसके अलावा इस कार्य के लिए उपायुक्त ने ड्यूटी मजिस्ट्रेट भी लगाए हैं। उपायुक्त अनीश यादव ने निर्देश देते हुए कहा कि नकल रहित परीक्षा करवाना तमाम अधिकारी सुनिश्चित करें। इसमें किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने जिला शिक्षा अधिकारी को यह भी निर्देश दिए हैं कि अगर किसी परीक्षा केंद्र की बाउंड्री वॉल इत्यादि नहीं है तो उस बारे में भी रिपोर्ट दें।

जिले में हैं 116 परीक्षा केंद्र

उपायुक्त अनीश यादव के समक्ष परीक्षा संबंधित ब्यौरा देते हुए जिला शिक्षा अधिकारी प्रदीप नरवाल ने बताया कि जिले में 116 परीक्षा केंद्र हैं। इनमें 10वीं के 21 हजार 628 तथा 12वीं कक्षा के 17 हजार 377 परीक्षार्थी परीक्षा दे रहे हैं। अभी तक हिसार जिले में नकल संबंधित कोई भी मामला सामने नहीं आया है। परीक्षा शांतिपूर्ण तरीके से चल रही है। नकल की रोकथाम के लिए 9 फ्लाईंग टीम बनाई गई हैं, जिनमें 4 एसडीएम के नेतृत्व में, 4 प्रश्न पत्र से संबंधित टीम तथा एक जिला शिक्षा अधिकारी की अगुवाई में यह कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि जिला के तमाम खंड शिक्षा अधिकारियों को उपायुक्त अनीश यादव के निर्देशों की अनुपालना में निर्देश जारी कर दिए गए हैं कि अगर उनके क्षेत्र में किसी परीक्षा केंद्र पर अतिरिक्त पुलिस बल या व्यवस्था के लिए अतिरिक्त स्टाफ की जरूरत है तो उस बारे में रिपोर्ट कल तक भिजवाना सुनिश्चित किया जाए।

नहर कोठी स्कूल में मनाया राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

बरवाला। राजकीय मॉडल संस्कृति सीनियर सेकेंडरी स्कूल नहर कोठी बरवाला के प्रांगण में महान वैज्ञानिक डॉ. सीवी रमन की याद में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया। इसमें कक्षा छह से आठवीं तक के विद्यार्थियों ने विज्ञान दिवस पर अलग-अलग मॉडल प्रस्तुत किए। विद्यार्थियों ने जल संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण, ऑर्गेनिक, खेती तथा स्मार्ट सिटी जैसे मॉडल प्रस्तुत किए। इस विज्ञान दिवस को मनाने की रूपरेखा तैयार करने में भौतिकी प्रवक्ता रविंद्र सिंह तथा विज्ञान अध्यापिका मोना की अहम भूमिका रही। निर्णायक मंडल के रूप में भौतिकी प्रवक्ता विक्रम गोयल और जीव विज्ञान प्रवक्ता रमेश यादव ने भूमिका निभाई। स्कूल प्राचार्य मनोज गुप्ता ने विज्ञान मॉडलों का अवलोकन किया और प्रतिभागी बच्चों की प्रशंसा करते हुए उत्साहित किया।

खुली बोली

ग्राम पंचायत बालावास में मेन बस स्टैंड के पास सामान्य धर्मशाला के मलबे की खुली बोली दिनांक 07.03.2025 को ग्राम सचिवालय बालावास में सुबह 11:00 बजे की जाएगी। जिसकी सिक्योरिटी राशि 25000 रुपए है। बाकि शर्तें मौके पर बता दी जाएंगी।

सरपंच – श्रीमती सीमा
ग्राम सचिव – श्रीमती पिंकी

खबर संक्षेप

हांसी। मंदिर शिखर के निर्माण कार्य का शुभारंभ करते संदीप जिंदल व अन्य।

श्री सालासर धाम मंदिर का शिखर निर्माण कार्य शुरू

हांसी। राजकीय महाविद्यालय रोड स्थित श्री सालासर धाम मंदिर में शनिवार को पूजा-अर्चना के उपरांत मंदिर शिखर के निर्माण कार्य का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का आयोजन श्री सालासर धाम सेवा समिति द्वारा किया गया। कार्यक्रम के विशेष सहयोगी संदीप जिंदल ने सपरिवार पूजन के उपरांत मंदिर के शिखर की नींव रखी। सर्वप्रथम गणेश पूजन हुआ तत्पश्चात शिखर की नींव का मंगल कार्य का शुभारंभ हुआ। मंदिर प्रधान संदीप अरोड़ा ने बताया की हांसी का सालासर धाम साक्षात बालाजी का स्वरूप है। यह मंदिर आस्था का बड़ा केंद्र है तथा काफी दूर से दूर भक्तजन सालासर बालाजी के दर्शनों के लिए मंदिर में आते हैं।

आज भी ओवरब्रिज रहेगा बंद, रूट डायवर्ट

मरम्मत कार्य के चलते जिंदल ओवरब्रिज बंद होने से लोगों को हो रही परेशानी

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

हिसार-दिल्ली रोड स्थित जिंदल पुल को दो दिन के लिए बंद कर दिया गया है। लोक निर्माण विभाग द्वारा इस पुल की आवश्यक मुरम्मत की जानी है। पुल बंद होने के कारण जनता को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। जिंदल पुल बंद करने को देखते हुए प्रशासन की ओर से सेक्टर 9-11 मोड पर नाका लगाकर चेतावनी वाले साइन बोर्ड लगाए गए हैं, इससे जनता को कोई खास राहत नहीं मिल रही। बीएंडआर ने जिंदल पुल रिपेयरिंग के लिए पुल को शनिवार सुबह बंद कर दिया था। ऐसे में सूर्य नगर व सेक्टर 1-4 की तरफ से रूट डायवर्ट किया गया है। सुबह 6 बजे जिंदल पुल के दोनों तरफ बेरिकेडिंग कर इसे ब्लॉक कर दिया गया। जिंदल पुलिस के 50 मीटर आगे साइन बोर्ड लगाया गया और पुल पर जेबीसी अड़ाकर बंद किया गया है मगर फिर भी लोग जेसीबी के साइड से रास्ता बनाकर निकल रहे हैं। बीएंडआर के अनुसार जिंदल पुल पर मिलिंग का काम और फिर डीबीएम की लेयर डाली जाएगी। पुल पर पुरानी सड़क की परत को उतार कर नई सड़क बनाई जाएगी। बीएंडआर के एसई अजीत सिंह ने बताया कि जिंदल आरओबी की लंबाई करीब 1 किलोमीटर है। पहले जिंदल आरओबी पर काम होगा। इसके बाद अगले सप्ताह में डाबड़ा चौक आरओबी की रोड निर्माण का काम होगा।

हिसार। ओवरब्रिज पर आवगमन बंद करने के लिए रास्ते में खड़ी कई गई जेसीबी। फोटो: हरिभूमि

2 जगह पर रूट डायवर्ट 4 नाके लगाए

ट्रैफिक पुलिस की ओर से 2 जगह पर रूट डायवर्ट किए गए हैं और 4 जगहों पर नाके लगाए गए हैं मगर जहां से रूट डायवर्ट किया गया है वहां ट्रैफिक पुलिस मौजूद नहीं है। मुन्ना स्वीट्स वाले रोड को वन वे कर दिया गया है। सेक्टर 9-11 इंडस्ट्रीयल एरिया की तरफ से आने वाले वाहनों को यू टर्न लेकर जिंदल चौक की तरफ जाना पड़ रहा है। हिसार कैंट से आने वाले लोगों को भी शहर के अंदर आकर यू टर्न लेना पड़ रहा है। शहर की एंट्री पर कोई बड़ा साइन बोर्ड या ट्रैफिक पुलिस को तैनात नहीं किया गया। कैंट से आने वाले वाहन रायपुर होकर सूर्यनगर आरओबी के जरिए शहर में आ सकते हैं। इसके कारण जिंदल चौक पर जाम की स्थिति पैदा हो गई है। यहां कई बड़े अस्पताल हैं।

शहर को हाइवे से जोड़ते है ओवरब्रिज: जिंदल पुल शहर को हिसार-दिल्ली नेशनल हाइवे से जोड़ता है। इस पुल पर बड़े वाहनों से लेकर छोटे वाहन तक निकलते हैं। हिसार कैंट से हिसार शहर आने के लिए इसका इस्तेमाल लोग करते हैं। वहीं शहर स्थित इंडस्ट्रीयल एरिया और जिंदल फैक्ट्री में आने वाले ट्रक इसी पुल का इस्तेमाल करते हैं। एक अनुमान के अनुसार हर रोज लगभग एक लाख वाहन इस पुल से गुजरते हैं। पिछले काफी दिनों से जिंदल पुल की सड़क की हालात खस्ता थी। काफी ज्यादा गड्ढे होने के कारण इसको नया बनाने की लगातार मांग उठ रही थी। बीएंडआर की तरफ से पुल की सड़क के गड्ढों को भरा गया लेकिन कोई भी उसका फायदा नहीं हुआ।

हांसी। शिविर में रक्तदान करते एसडीएम राजेश खोथ। फोटो: हरिभूमि

रक्तदान महादान और रक्तदाता समाज के असली हीरो : साहिल

- एसडी महिला महाविद्यालय में आयोजित शिविर में 98 लोगों ने किया रक्तदान

हांसी। एसडी महिला महाविद्यालय में शनिवार को लायन्स क्लब, हांसी व सनातन धर्म महिला महाविद्यालय प्रशासन के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में अग्रोहा मेडिकल कॉलेज की डॉ. ऋचा नेतृत्व में 18 चिकित्सकों की टीम द्वारा रक्त संग्रहण किया गया।

रक्तदान शिविर में विधायक विनोद भयाना के पुत्र साहिल भ्याना ने मुख्यातिथि के रूप में शिरकत की। जबकि रक्तदान शिविर की अध्यक्षता एसडीएम राजेश खोथ ने की तथा शिविर में रक्तदान भी किया। रक्तदान शिविर के आयोजन में कालेज प्राचार्य सुरेश कुमार गुप्ता, स्टाफ व एनएसएस की छात्राओं ने रक्तदान व सहयोग किया। मुख्यातिथि साहिल भयाना ने कहा कि रक्तदान महादान है और रक्तदान कर दूसरों का जीवन बचाने वाले रक्तदाता समाज के असली हीरो है। हर व्यक्ति को रक्तदान कर समाज के उत्थान में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। शिविर में त्रिवेणी कला संगम के प्रधान ओमकुमार गर्ग ने 155वीं बार रक्तदान किया। शिविर में 98 यूनिट रक्तदान किया। इस अवसर पर लायन्स क्लब प्रधान लायन दीपक मित्तल, सुरेश बंसल, अशोक भुटानी, जुगल ग्रोवर, नरेश लीखा, रामस्वरूप खट्टर, प्रवीण गर्ग, साधु राम सिंगला, सुरेन्द्र बांगा, अशोक बंसल, देवेन्द्र सोनी, योगेश मुंजाल, श्याम सुन्दर सैनी, सत्यपाल बंसल, सुनील जैन, सतपाल खेड़ी वाले, अजय कम्बीरी, जेसीआई प्रधान राजेश बंसल आदि उपस्थित थे।

अलका सरदाना बनी शाखा बरवाला संरक्षक

बरवाला। अखिल भारतीय महिला सेवा संघ शाखा बरवाला की चुनावी बैठक हुई। इस बैठक की अध्यक्षता प्रांतीय उपाध्यक्ष सेवानिवृत प्राचार्य ओमप्रकाश वधवा ने की। बैठक में सर्वसम्मति से नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। शाखा बरवाला की संरक्षक के रुप में चेयरमेन नगरपालिका बरवाला रमेश बैटरीवाला की धर्मपत्नी अलका सरदाना को चुना गया। शाखा की महिला अध्यक्ष वीना चुघ और महिला सचिव मंजू सरदाना तथा कोषाध्यक्ष नीशू वधवा, उपप्रधान सिमरण पाहुजा व आशा चुघ, सहसचिव सुनीता पठनेजा व अंजू रहेलन, सलाहकार सुनीता भाटिया व कृष्णा सरदाना, सहकोषाध्यक्ष अनिता ककड़ व अंजू रहेजा को सर्वसम्मति से चुना गया।

बरवाला। अखिल भारतीय महिला सेवा संघ शाखा बरवाला नवनियुक्त संरक्षक, अध्यक्ष, सचिव व कोषाध्यक्ष।

हिसार। कलश यात्रा निकालते श्रद्धालु।

कलश यात्रा के साथ गोशाला में गोकथा का शुभारंभ

हिसार। धांसू गांव की राधा कृष्ण गोशाला में गोकथा का शुभारंभ हुआ। पहले दिन माह शबरी का प्रसंग सुनाया गया। कथा वाचक संत बलदेवा नंद शास्त्री ने कहा कि भक्ति हो तो शबरी जैसी। शबरी राम को ढूंढने नहीं गई, बल्कि राम स्वयं शबरी को ढूंढने आए। कथा से पहले श्री राधा-कृष्ण मंदिर से कथा प्रांगण तक कलश यात्रा निकाली गई। संत बलदेवा नंद शास्त्री ने गोमाता की महिमा का विस्तार से वर्णन किया। गोसेवा करने वालों का जीवन आनंदमय रहता है। मनुष्य की उम्र 100 वर्ष मानी जाती है, लेकिन नशा न करने वाले भी मुश्किल से 90-95 साल तक ही जीते हैं। अधिकतर लोग 80 साल भी नहीं जी पाते। इस दौरान सरपंच प्रतिनिधि सुरजीत वर्मा, गोशाला प्रधान वेदप्रकाश बैनिवाल, पूर्व सरपंच मनोहर लाल भाखर, महाबीर खलेरी, बंशीलाल जांगू, सरजीत मांझु, मंजनलाल, नुणाराम राड़ आदि मौजूद रहे।

रोमांचक मुकाबले में लुवास ग्रीन की टीम बनी चैंपियन

- हकृवि की टीम रही उपविजेता
- लुवास में तीन दिवसीय ऑल इंडिया वाइस-चांसलर वॉलीबॉल कप टूर्नामेंट का समापन

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

लुवास विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय ऑल इंडिया वाइस-चांसलर वॉलीबॉल कप टूर्नामेंट का शनिवार को समापन हो गया। रोमांचक फाइनल मुकाबले में लुवास ग्रीन की टीम ने 3 सेट में 21-13, 21- 12 व 21 -18 से हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की टीम को हराकर चैंपियनशिप ट्रॉफी अपने नाम कर ली। वहीं तीसरे स्थान के लिए मैच लुवास की ब्लू टीम और मोहनलाल सुखाड़िया विवि की टीम के बीच खेला गया जिसमें लुवास ब्लू टीम ने मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय की टीम को 21-10,21-12,21-17 से हरा कर मैच जीत लिया।

हिसार। विजेता टीम को सम्मानित करते अतिथिगण। फोटो: हरिभूमि

समापन समारोह पर उपस्थित मुख्य अतिथि लुवास के कुलसचिव डॉ. एसएस ढाका ने विजेता और उपविजेता व तीसरे स्थान पर रही टीमों को ट्रॉफी व पुरस्कार प्रदान किए। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह बहुत ख़ुशी की बात है कि लुवास ने इस टूर्नामेंट की मेजबानी की और लुवास ग्रीन टीम ने पहला तथा लुवास ब्लू टीम ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। उन्होंने एचएयू के खिलाड़ियों को भी दूसरे स्थान पर आने पर बधाई दी। डॉ. ढाका ने सभी खिलाडियों को भविष्य में और अच्छा खेलने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि खेल में हार जीत होना तो तय है परन्तु सभी टीमों ने बहुत अच्छा खेल खेला। गैर शिक्षण कर्मचारियों के लिए ऐसे टूर्नामेंट होते रहना चाहिए जोकि कर्मचारियों को काम के साथ साथ खेल कूद और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करते है।

छात्र कल्याण निदेशक डॉ. सज्जन सिहाग ने समापन समारोह पर उपस्थित विशिष्ट अतिथि हरियाणा कृषि विवि के कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, छात्र कल्याण निदेशक एच.ए.यू. डॉ. एम. एल. खीचड़ का स्वागत किया। मौके पर पशु चिकित्सा महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. गुलशन नारंग, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. वी.एस. पंवार, डॉ. पवन कुमार, डॉ. मनोज रोज, विकास खरब, रितिका, डॉ. बलजीत गिरधर, डॉ. सुशील लेघा, डॉ. डीएस बिढान, लुवास नॉन टीचिंग प्रधान दयानंद सोनी आदि उपस्थित रहे।

अन्न, वस्त्र आदि के मूल्य बढ़ रहे हैं लेकिन नैतिक मूल्य घट रहे : साध्वी यशोधरा

- अणुव्रत समिति ने मनाया 77वां अणुव्रत स्थापना दिवस

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

अणुव्रत समिति हिसार की ओर से 77वां अणुव्रत स्थापना दिवस अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण की सुशिष्या शासनश्री साध्वी श्री यशोधरा व शासनश्री साध्वी श्री पशरमरति के सानिध्य में गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल मॉडल टाउन में मनाया गया। शनिवार को आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता अणुव्रत समिति के अध्यक्ष राजेंद्र अग्रवाल ने की। कार्यक्रम की शुरूआत विनोद जैन ने अणुव्रत गीत के माध्यम से की।

हिसार। स्थापना दिवस के अवसर पर उपस्थित समिति के पदाधिकारी।

साध्वी श्री यजुयशा व साध्वीश्री शांति प्रभा ने बताया कि 1 मार्च 1949 को अणुव्रत आंदोलन की शुरुआत हुई थी। उन्होंने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि बच्चे हमारे देश का भविष्य और नींव हैं इसलिए उनका हर प्रकार से मजबूत होना आवश्यक है। वे नैतिक रूप से मजबूत हों तथा नशे इत्यादि से दूर रहकर अच्छी शिक्षा प्राप्त करके देश के अच्छे नागरिक बनें।

साध्वी श्री यशोधरा ने अपने संदेश में कहा कि आज देश में मूल्यों का संकट है। केवल भौतिक मूल्यों का ही नहीं बल्कि नैतिक मूल्यों का भी है। यह विचित्र बात है कि अन्न, वस्त्र, सीमेंट आदि के मूल्य बढ़ रहे हैं और सत्य, सदाचार, सरलता आदि के मूल्य घट रहे हैं।

मंच संचालन मंत्री दर्शन लाल शर्मा ने किया। प्रिंसिपल प्रताप सिंह ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर दर्शन लाल शर्मा मंत्री, विनोद जैन, डॉ. सतपाल शर्मा, सुनील मित्तल, सुरेश जांगड़ा, सतीश कुमार, टेक राम बूरा, जगदीश गर्ग, श्रवण गिरधर, अध्यापिका कंचन, अध्यापक हरीश कुमार आदि उपस्थित रहे।

एसडी स्पोर्ट्स स्कूल, ढाणा खुर्द की तीन खिलाड़ियों का हॉकी टीम में चयन

हांसी। एसडी स्पोर्ट्स स्कूल ढाणा खुर्द के विद्यार्थियों ने पढ़ाई के साथ-साथ खेल क्षेत्र में भी सर्वश्रेष्ठ परिणाम दिया है। विद्यालय की तीन विद्यार्थियों का पंचकूला में हो रही राष्ट्रीय सीनियर वूमेन हॉकी चैंपियनशिप में चयन हुआ है। विद्यालय के प्रधानाचार्य व हरियाणा प्राइवेट स्कूल संघ के प्रदेश उपाध्यक्ष कुलदीप यादव ने बताया कि यह प्रतियोगिता 1 से 12 मार्च तक पंचकूला में आयोजित होगी। इसमें हमारे विद्यालय की तीन खिलाड़ी इंदू, रिया और मुस्कान का चयन हुआ है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में स्कूल के तीन विद्यार्थियों का चयन होना हमारे लिए बड़े गौरव की बात है। उन्होंने बताया कि उनके स्कूल में सरकार द्वारा खेल नर्सरी की स्वीकृति प्रदान की गई है।

हांसी। राष्ट्रीय सीनियर वूमेन हाकी टीम में चयनित एसडी स्पोर्ट्स स्कूल की खिलाड़ी।

हिसार। कॉलेज में पहुंची डॉ. मधु सिद्धार्थ का स्वागत करते अधिकारी।

स्वस्थ युवा बनाएंगे विकसित भारत : डॉ. मधु सिद्धार्थ

हिसार। दयानंद महाविद्यालय में स्थायी भविष्य के लिए युवा विषय पर चल रहे सात दिवसीय एनएसएस कैंप के दौरान प्रार्थना व योगा के साथ दिन की शुरुआत हुई। इसके बाद स्वयंसेवकों को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी से अवगत करवाने के सर्वेश हस्पताल के बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. मनु सिद्धार्थ को आमंत्रित किया गया।

डॉ. मनु सिद्धार्थ ने शनिवार को कहा कि भारत को स्वस्थ बनाने के लिए हमें अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना जरुरी है। उन्होंने कहा कि स्वस्थ रहने के लिए प्रतिदिन पोषण युक्त आहार और व्यायाम करना अति आवश्यक है। कई बिमारियों के बारे में बताते हुए उन्होंने उनसे बचने के उपाय भी बताएं। डॉ. मनु ने अपने जीवन के अनुभवों को सांझा करते हुए युवाओं का मार्गदर्शन किया। इसके साथ ही शिविर में आज कैंप के विषय 'स्थायी भविष्य के लिए युवा' पर विडियो मेकिंग प्रतियोगिता और काव्य पाठ का आयोजन करवाया गया। जिसका विषय समाज में फैली कुरीतियों पर रोक लगाना था। जिसमें निर्णायक मण्डल की भूमिका महाविद्यालय से डॉ. वलेरीया सेठी ने निभाई। काव्य पाठ में नंदनी प्रथम, अलीशा द्वितीय व कृष्णा तृतीय स्थान पर रहें। इस मौके पर एनएसएस के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. इंद्रजीत सिंह, चेतन शर्मा और डॉ. छवि मंगला मौजूद रहें।

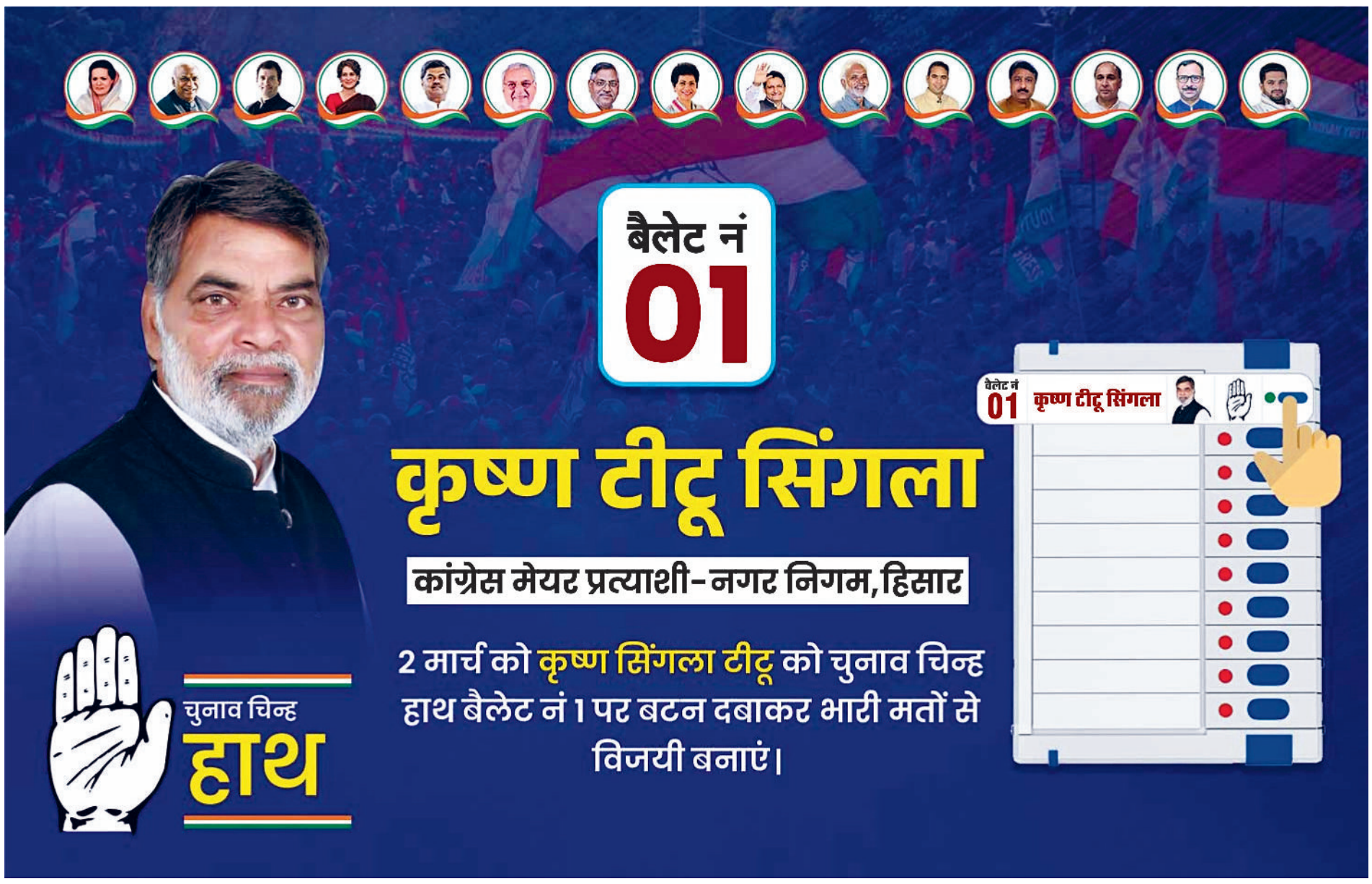

एक गोली खाइए फिट हो जाइए

अपने शरीर को हेल्दी-फिट रखने के लिए अच्छी डाइट के साथ रेग्युलर एक्सरसाइज को जरूरी माना जाता है। लेकिन वैज्ञानिकों ने हाल में एक ऐसी गोली बनाने में सफलता हासिल की है, जिसे खाने से 10 किमी. दौड़ने के बराबर का एक्सरसाइज बेनिफिट मिल जाएगा। कैसी है ये कमाल की गोली, कैसे करेगी काम और किसके लिए होगी फायदेमंद, आप जरूर जानना चाहेंगे।

कवर स्टोरी

डॉ. माजिद अलीम

अच्छी सेहत के लिए डॉक्टर से लेकर फिटनेस एक्सपर्ट और अनुभवी लोग भी एक ही सुझाव देते हैं-डेली एक्सरसाइज कीजिए। लेकिन अगर कोई इतना अशक्त हो कि वो हाथ-पैर हिला ही नहीं पाए तो वो क्या करे? विज्ञान ने ऐसे व्यक्ति के लिए भी अब रास्ता निकाल लिया है कि वह एक इंच हिले बिना भी अच्छे वर्कआउट का स्वास्थ्य लाभ अर्जित कर सकता है।

बना ली गई करामाती गोली

डेनमार्क देश की आरहुस यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने एक पिल (गोली) विकसित की है, जो शरीर में 10 किमी. दौड़ के मेटाबॉलिक (पाचन) प्रभाव जितना असर पैदा कर सकती है, वह भी बिना पसीना बहाए। 'पफ एग्रीकल्चर एंड फूड केमिस्ट्री' नामक जर्नल में इस शोध उपलब्धि को प्रकाशित किया गया है। इसके मुख्य शोधकर्ता और केमिस्ट डॉ. थॉमस पौल्सेन ने बताया, 'हमने एक मॉलिक्यूल विकसित किया है, जो शरीर में कड़ी एक्सरसाइज और फास्टिंग (व्रत) की मेटाबॉलिक प्रतिक्रिया की नकल उत्पन्न कर सकती है। यह मॉलिक्यूल शरीर को उस मेटाबॉलिक अवस्था में ले आता है, जो कि खाली पेट तेज रफ्तार 10 किमी. की दौड़ के समान होता है।' इस मॉलिक्यूल को नाम दिया गया है-लाके। फिलहाल, इसे लैब में चूहों पर टेस्ट किया जा रहा है, जिनमें टॉक्सिसिटी के कोई चिन्ह दिखाई नहीं दिए हैं। ध्यान देने वाला तथ्य यह है कि लाके ने टॉक्सिंस शरीर से फ्लश आउट कर दिए और इससे उनका हार्ट मजबूत भी हो गया।

बनती रही हैं ऐसी दवाएं

'एक्सरसाइज पिल' का विचार एक दशक से अधिक समय पूर्व से चर्चा में रहा है। अनेक शोधकर्ता उन कंपाउंड्स से प्रयोग कर रहे हैं, जो तीव्र फिजिकल एक्टिविटी के बायोलॉजिकल प्रभावों का मुकाबला कर सकें। लाके एकमात्र पिल नहीं है, जो वर्कआउट के लाभ प्रदान करती है। पिछले साल फ्लोरिडा यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने एसएलयूपीपी-332 नामक कंपाउंड विकसित किया था, जिसने चूहों में मेटाबॉलिज्म और सहनशीलता में इतनी वृद्धि की कि वह पहले की तुलना में लगभग 50 प्रतिशत अधिक दौड़ने लगे। इस अध्ययन के प्रमुख लेखक और फार्मेसी के प्रोफेसर थॉमस बर्रिस के अनुसार, 'यह कंपाउंड बुनियादी तौर पर स्केलटेल मांसपेशियों को बताता है कि वह वही परिवर्तन लाएं, जो स्ट्रेंथ ट्रेनिंग के दौरान देखने को मिलता है।'

'द गार्जियन' के अनुसार सैन डिएगो के सालक इंस्टिट्यूट ने 2008 में जीडब्लू 501516 (संक्षेप में 516) ड्रग विकसित की। यह मुख्य जींस को संकेत भेजती है कि शुगर की जगह फैट को बर्न करे। लेकिन इस ड्रग का एक वैरिएंट धावकों के लिए डोपिंग ड्रग बनकर रह गया। फिर 2015 में कंपाउंड 14 नामक एक अन्य ड्रग विकसित की गई, जिससे यह बात प्रकाश में आई कि यह मोटे चूहों का ग्लूकोज टॉलरेंस बेहतर करके वजन कम कर सकती है। यह सभी प्रयोग चिकित्सा विज्ञान ड्रग्स के उस वर्ग से संबंधित हैं, जिसे 'एक्सरसाइज मिमेटिक्स' कहते हैं, जो आवश्यक रूप से शरीर में उन अलग-अलग मार्गों को सक्रिय करते हैं, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से एक्सरसाइज से प्रभावित होते हैं। इन ड्रग्स में क्षमता है कि अल्झाइमर, पार्किंसन और डिमेंशिया को होने से देर तक रोके रखें और मधुमेह, मोटापे की रोकथाम में भी मदद करें।

अक्षम लोगों के लिए होगी वरदान

एक बार जब इस दवा के इंसानों पर ट्रायल पूरे हो जाएंगे तो इनमें से कुछ ड्रग्स को वजन कम करने वाली ड्रग्स के साथ भी दिया जा सकेगा जैसे ओर्जेपिक, जो विशेष रूप से बुजुर्गों को सरकोपेनिया की स्थिति में दी जाती है ताकि मांसपेशियों की क्षति को रोका जा सके। अगर इंसानों को एक गोली से एक्सरसाइज के फायदे मिलने लगेंगे, इससे उनकी फिटनेस परफेक्ट हो जाएगी तो यह उन लोगों के लिए चमत्कार होगी, जो फिजिकल एक्टिविटी में हिस्सा नहीं ले पाते हैं, जैसे-बुजुर्ग, शारीरिक रूप से कमजोर, दिव्यांग, जिन्हें मस्कुलर डिस्ट्रॉफी है, जिनकी कोई ऐसी सर्जरी हुई है कि मूवमेंट न कर पा रहे हों या अन्य लोग, जो गंभीर रूप से बीमार हैं।

एक्सरसाइज करना है बेस्ट

बीमार या अक्षम लोगों की बात छोड़ दें तो अन्य स्वस्थ लोगों के लिए यही बेहतर होगा कि वे सुबह देर तक यह सोचकर न सोते रहें कि पलंग पर पड़े हुए गोली खाकर फिट हो जाएंगे। उनके लिए यही उचित होगा कि मैदान में निकलें, वॉकिंग करें, रनिंग करें या मनपसंद एक्सरसाइज करें। इस बात को समझ लेना चाहिए कि फिजिकल एक्सरसाइज का कोई विकल्प नहीं है, उससे न केवल शरीर स्वस्थ बनता है, मन भी प्रसन्न और ऊर्जावान रहता है। *

एक्सरसाइज का शरीर पर रिएक्शन

इस दवा के एक्शन को समझने से पहले यह जानना जरूरी है कि एक्सरसाइज की शरीर पर क्या प्रतिक्रिया होती है और लाके उसकी कैसे नकल करता है? खाली पेट कड़ा वर्कआउट, ब्लड प्लाज्मा के स्तर पर लेक्टेट रसायन में तेजी से वृद्धि कर देता है, इसके बाद बीटा-हाइड्रोक्सीबूटीरेट (बीएचबी) नामक एक अन्य रसायन कीटोन में धीरे-धीरे वृद्धि करता है। कीटोन जिगर में उस समय बनते हैं, जब पर्याप्त ग्लूकोज की अनुपस्थिति में शरीर जिगर में ऊर्जा के लिए फैट को तोड़ता है। ये दोनों रसायन भूख को कम करते हैं। साथ ही हृदय रोगों, टाइप 2 डायबिटीज के खतरों को भी कम करते हैं। इसके अलावा दिमागी फंक्शन को बेहतर करते हुए डिप्रेशन को कम करते हैं। ये सब फायदे केवल डाइट से हासिल नहीं हो सकतीं, क्योंकि जिस मात्रा में लेक्टेट और बीएचबी की जरूरत होती है, उससे अनावश्यक बायप्रोडक्ट्स जैसे नमक और एसिड मिल जाते हैं। कृत्रिम रूप से तैयार लाके से ये रसायन, ओरली मिल जाते हैं, बिना हानिकारक साइड इफेक्ट्स के।

जरूरी नहीं है कि जो व्यक्ति खूब हंसता-मुस्कुराता नजर आए, वो वास्तव में मन से खुश है। उदासी को मुस्कान से ढंकने वाले लोग स्माइलिंग डिप्रेशन के शिकार हो सकते हैं। ऐसे लोगों को घर-परिवार से लेकर वर्कप्लेस तक, सपोर्ट की जरूरत होती है।

मुस्कान से ढंकी उदासी स्माइलिंग डिप्रेशन

लाइफस्टाइल

मोनिका शर्मा

दुःख भी हंसी की ओट ले सकता है। टूटते-बिखरते दिल को थामकर भी सधी सी बातें की जा सकती हैं। उलझनों में घिरकर भी सुखद एहसास लोगों के सामने रखे जा सकते हैं। दरअसल, इंसान का व्यवहार हालात के मुताबिक कई रंग ओढ़ लेता है। कभी इसका कारण अपनों की बेरुखी होती है तो कभी समाज से मिला बेगानापन। ऐसे में कुछ लोग अपने आप तक सिमटने की राह चुन लेते हैं। चुप्पी के तले एक शोर गूंजता है पर सुनाई किसी को नहीं देता। ठहाकों को साथ रखने के बावजूद मन में सब कुछ ठहर गया होता है। यही स्थिति स्माइलिंग डिप्रेशन कही जाती है।

अवास्तविक छवि का आवरण: मौजूदा दौर में हर मोर्चे पर अवास्तविक सी छवि बनाते लोग अवसाद को भी मुस्कुराहटों की परतों तले छिपाने लगे हैं। जीवन की हर छोटी-बड़ी गतिविधि को अपनों-परायों तक पहुंचाते आभासी परिवेश में मुस्कुराते चेहरों के पीछे छिपी मुरझाती मनःस्थिति कोई नहीं देख पाता या यूं कहें कि देखना भी नहीं चाहता। न ही इन परिस्थितियों को जी रहा इंसान स्वयं यह सच किसी को दिखाना चाहता है। विज्ञान की भाषा में स्माइलिंग डिप्रेशन कहा जाने वाला यह व्यवहार अब हर उम्र के लोगों की जीवनशैली का हिस्सा है। हंसता-खिलखिलाता अंदाज पीड़ादाई अनुभूतियों का आवरण बन गया है। अपनों-परायों के सामने ठहाके लगाते बहुत से चेहरे, अपने भीतर सुस्ती, थकान और अकेलेपन से जूझते हुए जीवन बिता रहे हैं। उनका मन-मस्तिष्क नाउम्मीदी और नकारात्मता के घेरे में है। मुरझाता मन और मुस्कुराता चेहरा, बहुत से लोगों के लिए सब कुछ होकर भी कुछ न होने के हालातों को बयान करने वाला बर्ताव है। चिंतनीय है कि अब ऐसे लोगों का आंकड़ा बढ़ रहा है। नकलीपन का आवरण असली भावों को छिपाने लगा है। यही कारण है कि हर ओर दिखती बेहतरी के बावजूद मन से बीमार होते लोगों की संख्या बढ़ी है।

बदल गया परिवेश: सवाल यह है कि मन की टूटन को छिपाने का यह परिवेश आखिर कैसे बन गया? क्यों हर व्यक्ति को यह लगने लगा कि दुःख को बताने-जताने से कहीं अच्छा हंसते-खिलखिलाते हुए लोगों का सामना करना है। किस तरह यह आवरण बड़े-बुजुर्गों की पीड़ा से लेकर बच्चों की मानसिक उलझन तक पर पर्दा डालने का माध्यम बन गया है? क्यों किसी के मन को समझने-जानने की कोशिश नहीं की जाती? जबकि यह अवसाद का ही एक रूप है। ऐसा डिप्रेशन, जिसमें इंसान अपने मन के विषाद को छिपाने के लिए हर जगह, हर हाल में हंसता रहता है। खुशहाल नजर आता है। सार्वजनिक जीवन में जिंदादिल दिखते ऐसे लोग निजी जीवन में अकेलेपन के स्याह साये से जूझते हैं। अध्ययन बताते हैं कि स्माइलिंग डिप्रेशन की समस्या से ग्रस्त व्यक्ति सुखी और संतुष्ट दिखता जरूर है, पर भीतर ही भीतर अवसाद से जूझता है। यही कारण है कि स्माइलिंग डिप्रेशन को हाई फंक्शनिंग डिसऑर्डर भी कहा जाता है। ध्यातव्य है कि हाई-फंक्शनिंग डिसऑर्डर के अंतर्गत ऐसी मानसिक समस्याएं आती हैं, जिनमें व्यक्ति सामान्य दिखने के बावजूद अंदर से बीमार रहता है। एक तरह का क्रॉनिक डिप्रेशन कहे जाने वाले इस डिसऑर्डर का शिकार इंसान आम जीवन को सामान्य ढंग से जीते हुए भावनात्मक रूप से असहजता का अनुभव करता है। खुशमिजाजी के पीछे गहरा खालीपन होता है।

सहयोग-संवेदना ओं की कमी: आज के दौर में बिना लाग-लपेट मन की बात कहने का माहौल, घर हो या बाहर कहीं नहीं दिखता। न दुःख साझा करने का भाव दिखता है और न समझने का। यही कारण है कि लोग चुपचाप अपनी पीड़ाओं से जूझने लगे हैं। हर हाल में सहज दिखते हैं। हर परिस्थिति में प्रसन्नता जाहिर करते हैं। कहना गलत नहीं होगा कि व्यक्तिगत जीवन में चुना जा रहा यह असामान्य व्यवहार असल में असंवेदनशील होते सामाजिक-पारिवारिक परिवेश का मुखौटा उतारने वाला है। हम अचानक किसी के आत्महत्या जैसा कदम उठा लेने पर चकित तो होते हैं पर समय रहते तकलीफ साझा करने की पहल नहीं करते। दुखद है कि मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डालने वाली इन स्थितियों को आज भी गंभीरता से नहीं लिया जाता।

मदद की है दरकार: जरूरी यह है कि वर्किंग प्लेस से लेकर घर-परिवार और आस-पड़ोस तक, स्माइलिंग डिप्रेशन से जूझते लोगों के बर्ताव को समझकर उनका साथ दिया जाए। ऐसी दबी-छुपी समस्याओं को लेकर अब सभी को यह समझना होगा कि कुछ न कहना, सब कुछ कहने जैसा है। जैसे भी संभव हो ऐसे लोगों की मदद की उचित राह तलाशना बेहद आवश्यक है। *

गजल

अवतार सिंह अक्षरजीवी

खुल के बात कर

छुपाने की जरूरत नहीं, खुल के बात कर
पर पूरी शिद्दत से किसी एक से बात कर

अगर मेरा प्यार तुझे मुतमइन नहीं करता
तुझे जिससे खुशी मिले, तू उससे बात कर

मैं मोहब्बत करुंगा पर मेरी शर्तों पर
या तो मुझसे बात कर, या सबसे बात कर

तेरी मुस्कुराहट मेरी मिलकियत है और मैं
नहीं चाहता तू दूसरों से हंस-हंसके बात कर

अपने दिल में पूरी दुनिया को जगह मत दे
गैरों से एक दूरी एक दायरा रखके बात कर

मेरी मोहब्बत के पिंजरे में तालाबंद नहीं है
या तो उड़ जा या फिर अंदर रहके बात कर

कहानी

संजीव जायसवाल 'संजय'

वह अपनी बच्ची को घुमाने के लिए पार्क में जहां भी जाता, गुब्बारे बेचने वाला एक लड़का वहां पहुंच जाता। एक दिन खीझकर उसने गुब्बारे वाले को डपट दिया। इस पर उस लड़के ने जो कहा, वह बेहद शर्मिंदा महसूस करने लगा। मन को छूती एक मार्मिक कहानी।

गुब्बारे वाला

बाबूजी, गुब्बारा ले लीजिए' अचानक वही दुबला-पतला लड़का एक बार फिर सामने आकर खड़ा हो गया।

'मुझे नहीं लेना, चलो भागो यहां से।' मैंने झल्लाते हुए उसे डपट दिया।

'ले लीजए न बाबूजी, देखिए कितने अच्छे गुब्बारे हैं! लाल, हरे, नीले, पीले हर रंग के प्यारे-प्यारे गुब्बारे। बिटिया को बहुत पसंद आएंगे।' उसने जोर देते हुए कहा।

मैं उसे दोबारा डपटने जा ही रहा था कि रचना तुतलाते हुए बोली, 'पापा, जे पीला वाला गुब्बारा बौत अच्छा है.. इछे दिला दीजिए।'

मैं रचना की कोई बात नहीं टालता था। अतः न चाहते हुए भी उसे गुब्बारा दिलवाना पड़ा। वो लड़का एक रुपया लेकर खुशी-खुशी वहां से चला गया।

पिछले महीने पत्नी (दीप्ति) की मौत के बाद रचना की पूरी जिम्मेदारी मेरे ऊपर आ गई थी। मैं रोज शाम उसे गोद में लेकर पार्क में आ जाता था। पार्क की इस बेंच पर बैठ कर मुझे बहुत शांति मिलती थी क्योंकि दीप्ति की यह पसंदीदा जगह हुआ करती थी। यहां आकर मुझे ऐसा लगता, जैसे वो मेरे साथ बैठी हो। मैं घंटों उसकी याद में खोया रहता।

पिछले कुछ दिनों से इस गुब्बारे वाले के कारण मुझे बहुत कोफ्त होने लगी थी। मैं इस बेंच पर आकर बैठता ही था कि यमदूत की तरह वह आ धमकता। बिना गुब्बारे बेचे टलता ही न था। उसे देखकर ही मुझे उलझन होने लगती थी।

एक दिन तंग आकर मैंने तय कर लिया कि कल से इस बेंच पर बैठूंगा ही नहीं। पार्क में बैठने के लिए मैंने पेड़ों के झुरमुट के पीछे एक दूसरी जगह तलाश ली थी। वहां लोगों की दृष्टि कम ही पड़ती थी, इसलिए वहां काफी शांति थी।

अगले दिन मैं रचना के साथ वहां जाकर बैठ गया। धीरे-धीरे आधा घंटा बीत गया। मैं मन ही मन खुश था कि आज गुब्बारे वाले लड़के ने मेरी शांति भंग नहीं की। तभी वह लड़का भूत जैसा वहां आ टपका, 'अरे, बाबूजी, आप यहां बैठे हैं। मैं समझा कि आज आप आएंगे ही नहीं।' फिर अपने गुब्बारों का झुंड रचना की तरफ बढ़ाते हुए बोला, 'बिटिया रानी, कौन-सा गुब्बारा दूं?'

'अबे, बिटिया रानी के भइया.., तू मुझे चैन से बैठने क्यों नहीं देता? जहां जाता हूं वहां आ धमकता है। क्या तेरे पास और कोई जगह नहीं है?' मैंने उसे बुरी तरह फटकार दिया।

डांट खाकर उस लड़के की आंखें छलछला आईं। वह उन्हें पोंछते हुए बोला, 'बाबूजी, माफ करिएगा, आपको दुख पहुंचाने का मेरा कोई इरादा नहीं था। कुछ दिनों पहले एक दुर्घटना में मेरे माता-पिता की मृत्यु हो गई थी। मेरे पास स्कूल की फीस भरने के लिए पैसे नहीं हैं। इसीलिए रोज शाम पार्क में गुब्बारे बेचने चला आता हूं। जिनकी गोद में बच्चे होते हैं, वे आसानी से गुब्बारे खरीद लेते हैं। इसीलिए आपके पास आ जाता था।'

इतना कहकर वह लड़का वहां से जाने लगा। मुझे अपने व्यवहार पर बहुत आत्मग्लानि हुई। मेरे दुख से उसका दुख ज्यादा बड़ा था। मैंने उसे आवाज देकर बुलाया और 100 रुपए का नोट उसकी तरफ बढ़ाते हुए कहा, 'इसे रख लो।'

'यह किसलिए?' उस लड़के का स्वर कांप उठा।

'तुम्हारी फीस के काम आएंगे' मैंने उसे समझाने का प्रयास किया।

यह सुनकर उस लड़के की आंखें एक बार फिर छलछला आईं। वह भर्राए स्वर में बोला, 'बाबूजी, मैं बेसहारा जरूर हूं, मगर भिखारी नहीं।'

'मेरा यह मतलब नहीं था, मैं तो सिर्फ तुम्हारी मदद करना चाहता था।' मैंने बात संभालने की कोशिश की।

उस लड़के ने पल भर के लिए मेरी ओर देखा फिर बोला, 'अगर आप मदद करना चाहते हैं तो सिर्फ इतना वादा कीजिए कि फिर कभी किसी गरीब को दुत्कारेंगे नहीं।'

इतना कह कर वह तेजी से वहां से चला गया। मैं चुपचाप बैठा रहा। मेरे अंदर इतना साहस नहीं बचा था कि उसे रोक सकूं। उसके आगे मैं अपने को बहुत छोटा महसूस कर रहा था। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

कारुणिक उजाला फैलाती दियासलाई

इस दुनिया में कई लोग अपने जीवनकाल में ही किंवदंती जैसे बन जाते हैं। वर्ष 2014 में नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी, ऐसी ही शख्सियत हैं। मध्य प्रदेश के छोटे से शहर विदिशा में जन्म लेने वाले कैलाश शुरू से ही देश, समाज और दुनिया में प्रताड़ना, हिंसा और शोषण के शिकार बच्चों के लिए कुछ करना चाहते थे। इसी मनो-संकल्प का यह परिणाम हुआ कि इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के बाद भी उन्होंने अपना जीवन बच्चों की सुरक्षा और उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। अपनी पांच दशक से अधिक की इस यात्रा में उन्हें किन-किन पड़ावों से गुजरना पड़ा, व्यक्तिगत-पारिवारिक जीवन में कैसे संघर्ष करने पड़े, किस-किस तरह के आरोप-आक्षेप सहने पड़े, कितनी बार अपने प्राणों को भी संकट में डालना पड़ा, इन तमाम अनुभूतियों और भोगे हुए यथार्थ को उन्होंने अपनी आत्मकथा में संजोया है। हाल में ही उनकी आत्मकथा 'दियासलाई' पुस्तक के रूप में प्रकाशित होकर आई है। इस किताब में ऐसे अनेक प्रसंग मौजूद हैं, जिससे साबित होता है कि कोई साधारण व्यक्ति, केवल अपने विचार, कर्म और महान जीवन उद्देश्य से ही असाधारण बन सकता है।

पुस्तक: दियासलाई (आत्मकथा), **लेखक:** कैलाश सत्यार्थी, **मूल्य:** 599 रुपए, **प्रकाशक:** राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

दियासलाई जैसी छोटी सी चीज में भी कितनी संभावना व्याप्त हो सकती है, कैसे वो समाज में करुणा का उजाला प्रसारित कर सकती है, इस आत्मकथा का शीर्षक इसे साबित करता है। अच्छी बात यह है कि इस आत्मकथा में लेखक ने अपनी कमजोरियों को भी सहजता से स्वीकार किया है। कहीं भी खुद को महान या दोषरहित सिद्ध करने की कोशिश नहीं की है। *

रचनाएं आमंत्रित...

हिंदी दैनिक **हरिभूमि** के फीचर पृष्ठों (रविवार भारती, सहेली, बालभूमि और सेहत) में प्रकाशनार्थ आलेख, छोटी कहानियां, कविताएं, व्यंग्य, बाल कथाएं आमंत्रित हैं। लेखकों से अनुरोध है कि अपनी रचनाएं कृतिदेव या यूनिकोड फॉन्ट में हमें ईमेल आईडी haribhoomifeaturedep@gmail.com पर मेल करें।

मस्ती के साथ कराए दिमागी वर्जिश भूल-भुलैया

आजकल वीडियो गेम्स और मोबाइल गेम्स में तमाम ऐसे खेल खूब चाव से खेले जाते हैं, जिनका बेस भूल-भुलैया होता है। सदियों से देश-दुनिया में अनेक ऐसे भूल-भुलैया बनाए जाते रहे हैं, जो रोमांचक अनुभव दिलाने के साथ ही दिमागी वर्जिश भी खूब कराते हैं। यहां बता रहे हैं, दुनिया में प्रसिद्ध भूल-भुलैया कहां हैं, उनकी क्या विशेषता है, इनकी शुरुआत कैसे हुई और इनके प्रकार से जुड़ी रोचक बातें।

एंज्वॉयमेंट / शिखर चंद जैन

आपने लखनऊ के इमामबाड़ा में, किसी फन पार्क या म्यूजियम में या किसी टूरिस्ट प्लेस पर भूल-भुलैया को जरूर एंज्वॉय किया होगा। पत्र-पत्रिकाओं में पजल सॉल्व करने के लिए भी इसका खूब प्रयोग किया होगा। इनकी विशेषताएं और उपयोगिताएं बहुत अनोखी होती हैं।

पौराणिक काल में मिले हैं प्रमाण

13वीं सदी की ग्रीक पौराणिक कथाओं में भी भूल-भुलैया जैसी संरचना और गतिविधियों के प्रमाण मिलते हैं। शुरू-शुरू में इन्हें भ्रमित करने या खेलने के लिए नहीं बल्कि आगंतुकों को आध्यात्मिक यात्रा पर भेजने के लिए बनाया गया था। इसका उद्देश्य उनके मन को शांत करना और आत्मनिरीक्षण करने के लिए था। इसमें एक ही घुमावदार रास्ते का अनुसरण किया जाता था।

बहुत पुराना है कॉन्सेप्ट

सबसे पहले भूल-भुलैया का दर्ज इतिहास, मिस्र में 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व का मिलता है। प्राचीन यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस ने मिस्र की भूल-भुलैया का दौरा करने का दावा किया और इसे एक घुमावदार इमारत के रूप में वर्णित किया। ये हजारों कमरों से बनी थीं, जिनमें से कई भूमिगत थे और जिनमें मिस्र के राजाओं की कब्रें भी थीं। उन्होंने लिखा कि यूनानियों के सभी काम और इमारतें एक साथ मिलकर भी श्रम और खर्च के मामले में निश्चित रूप से इस भूल-भुलैया से कमतर होंगी। मध्यकाल तक दुनिया के 25 कैथेड्रल चर्च में भी ऐसी संरचनाएं हुआ करती थीं। यूरोप और अमेरिका के प्राचीनतम चित्रों और पेंटिंग्स में भी इनके होने के प्रमाण मिले हैं।

ध्यान के लिए भूल-भुलैया

मनोरंजक गेम के रूप में इस्तेमाल करने के साथ-साथ स्ट्रेस और एंग्जायटी दूर करने के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है। दुनिया में कई जगह भूल-भुलैया का उपयोग वॉकिंग मेडिटेशन के लिए किया जाता है। भूल-भुलैया का उपयोग दुनिया भर में मन को शांत करने, मन को एकाग्र करने, चिंताओं से मुक्ति पाने, जीवन में संतुलन बनाए रखने, रचनात्मकता को बढ़ाने और ध्यान, सेल्फ रिफ्लेक्शन और तनाव को कम करने के लिए किया जाता है।

दो प्रकार के भूल-भुलैया

भूल-भुलैया के दो प्रकार माने जाते हैं। एक है लिबरिंथ और दूसरा हेज। लिबरिंथ अपेक्षाकृत आसान होती है। पर इसकी क्लासिकल डिजाइन इसे विशेष बनाती है, जबकि हेज पारंपरिक भूल-भुलैया है। यह जटिल होने के साथ-साथ इसमें लोगों के खो जाने की भी आशंका होती है। लिबरिंथ भूल-भुलैया एकतरफा होती हैं, जबकि हेज भूल-भुलैया शाखाओं में बंटी होती है। इसीलिए यह कठिन होती है।

दुनिया भर में हैं भूल-भुलैया

भूल-भुलैया का प्रचलन दुनिया भर में है। 90 से ज्यादा देशों में 6400 लिबरिंथ हैं। ब्रिटेन, अमेरिका जैसे देशों में इन से जुड़ी साप्ताहिक गतिविधियां होती हैं। यहां स्थानीय पार्क के अलावा अस्पतालों में भी लिबरिंथ बनाई गई हैं। 16वीं शताब्दी से शुरू होकर, यूरोपीय राजघरानों ने अपनी संपत्ति पर विस्तृत हेज भूल-भुलैया बनाना शुरू कर दिया। भूल-भुलैया का उद्देश्य मनोरंजन करना था, साथ ही गुप्त बैठकों के लिए निजी, दूर-दराज के स्थान प्रदान करना था।

सबसे बड़ा-कठिन भूल-भुलैया

1980 के दशक में, चित्रकार क्रिस्टोफर मैनसन ने घोषणा की थी कि उनकी भूल-भुलैया पुस्तक में पहेली को सुलझाने वाले पहले व्यक्ति को 10,000 डॉलर का पुरस्कार दिया जाएगा। 45 पन्नों की इस सचित्र पुस्तक का शीर्षक है 'भूल-भुलैया: दुनिया की सबसे चुनौतीपूर्ण पहेली को सुलझाएं।' इसमें पाठकों से एक काल्पनिक घर के केंद्र तक पहुंचने का रास्ता खोजने और रास्ते में पहेलियां सुलझाने को कहा गया था। हालांकि यह काम अपेक्षाकृत सरल लग रहा था, लेकिन पहेलियां बेहद कठिन थीं। पहले विजेता को इसका हल ढूंढ़ने में लगभग दो साल लग गए थे। कुछ वर्ष पहले तक सबसे बड़ा अस्थायी मकई भूल-भुलैया 60 एकड़ में फैला हुआ था। 2014 में, कैलिफोर्निया के डिक्सन स्थित कूल पैच पंपकिंस के आगंतुकों को विशाल, घुमावदार अस्थाई भूल-भुलैया का आनंद लेने का अवसर मिला, जिसके बारे में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने पुष्टि की कि यह अब तक की सबसे बड़ी भूल-भुलैया थी। यह इतना बड़ा था कि कई पर्यटकों ने इसमें खो जाने के बाद अपनी सहायता के लिए हेल्पलाइन नंबरों पर कॉल भी किया।

ये भी हैं दिलचस्प भूल-भुलैया

दुनिया की सबसे बड़ी हेज भूल-भुलैया में लगभग 2.5 मील लंबे रास्ते हैं। डोल प्लांटेशन का विशाल अनानास गार्डन भूल-भुलैया 14,000 उष्णकटिबंधीय पौधों से बनाया गया है। इसे 2008 में दुनिया में सबसे लंबा घोषित किया गया था। 2012 में, कलाकारों ने 250,000 किताबों से एक भूल-भुलैया बनाई। लंदन में पॉप-अप इंस्टॉलेशन 'अमेजमी' नाम से सैकड़ों स्वयंसेवकों द्वारा चार दिनों में बनाया गया था। इसे देखने वालों ने क्लासिक साहित्य का आनंद लिया। ब्राजील के कलाकार मार्कोस सबोया और गुआल्टर पुपो ने इस संरचना को स्पेनिश भाषा के लेखक जेएल बोर्गेस के फिंगरप्रिंट के आकार की नकल करने के लिए डिजाइन किया था। *

वीडियो गेम्स में भूल-भुलैया

कई शुरुआती वीडियो गेम्स में भी भूल-भुलैया बनाई जाती थी। 1970 के दशक में, पेन-एंड-पेपर भूल-भुलैया वाली किताबें चलन में आ गई थीं। बच्चे और वयस्क समान रूप से अलग-अलग भूल-भुलैया चित्रों के माध्यम से एक रेखा खींचते थे, जितना संभव हो, उतना कम गलत मोड़ लेने की कोशिश करते थे। लगभग उसी समय, शुरुआती वीडियो गेम कंपनियों ने सरल 2D भूल-भुलैया गेम बनाना शुरू कर दिया, जो पेन-एंड-पेपर गेम के समान ही थे, जिसमें भूल-भुलैया या भूल-भुलैया पहेलियों के माध्यम से दौड़ शामिल थी।

अपने कुदरती सौंदर्य के लिए देश के मशहूर हिल स्टेशंस में सिक्किम का अलग ही महत्व है। बीती फरवरी में लेखक ने अपनी सिक्किम यात्रा के दौरान कई बेमिसाल नजारों का दीदार किया। उन अनुभवों को यहां साझा कर रहे हैं अपनी जुबानी।

लाजवाब-मनमोहक सिक्किम के नजारे

यात्रा-अनुभव / समीर चौधरी

मेरा मानना है कि सैर करने वाले मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं। एक, जो बिना किसी योजना के यात्रा करते हैं। वह बिना किसी एजेंडा के ट्रिप पर निकल जाते हैं और प्रतीक्षा करते हैं कि नई लोकेशन और नजारे उनके सामने अपने आप खुलते चले जाएंगे। दूसरे प्रकार के पर्यटकों में इस किस्म का समभाव नहीं होता है। वे अपनी छुट्टियां मनाने के लिए निश्चित कार्यक्रम बनाते हैं और उसी के अनुसार चलने का प्रयास करते हैं। मैं खुद को दूसरी श्रेणी में रखता हूं। लेकिन मेरी यह धारणा हाल में की गई सिक्किम यात्रा के बाद बदल गई।

सिक्किम टूर की प्लानिंग: हालांकि बचपन में मैं कई बार मसूरी जैसे हिल स्टेशन की यात्रा कर चुका हूं। लेकिन उससे आगे का हिमालय क्षेत्र मेरे लिए रहस्य ही रहा है। इस कमी को पूरा करने के लिए मैं हाल ही में एक सप्ताह के लिए सिक्किम की यात्रा पर गया। मैंने अपना कार्यक्रम बनाने में अधिक समय बर्बाद नहीं किया और जल्दी से इस पहाड़ी राज्य की टॉप साइट्स चुन लिया, जहां मुझे जाना था जैसे- नाथूला पास, गुरुडोंगमार झील और युमथांग घाटी।

बर्फीले सौंदर्य को देखने का सपना: फरवरी में गंगटोक (सिक्किम की राजधानी) में कड़ाके की ठंड पड़ती है। मैं सुबह के समय इस शहर में पहुंचा था। उद्देश्य सिर्फ इसे देखना ही नहीं था बल्कि मैं उम्मीद कर रहा था कि मैं बर्फीली चोटियों के बीच होऊंगा। मैंने इस समय यहां जाने का इसलिए निर्णय लिया था ताकि सिक्किम को उसके जाड़े के पूर्ण वैभव में देख सकूं, यह जानते हुए भी कि कुछ चुनौतियों का अवश्य सामना करना पड़ेगा।

नहीं देख सका कंचनजंगा: जब मैं पहुंचा तो ठंडे गंगटोक ने मेरा स्वागत किया। बादल भरे आसमान में सूरज तो बस दिल को तसल्ली भर दे रहा था। देर शाम तक मेरे मुंह से कार्बन डाइऑक्साइड गहरे जमे धुएं की तरह ऐसे निकल रही थी, जैसे मैं चेन स्मोकिंग कर रहा हूं। सिक्किम की राजधानी में मैंने बाजारों और मठों को देखा, दिन में थोड़ी-थोड़ी देर के लिए रोशनी की किरण दिख जाती थी। मेरे लिए आकर्षण के स्पॉट्स वह थे, जहां से मैं दुनिया की तीसरी सबसे ऊंची चोटी (8,586 मीटर) कंचनजंगा को बिना किसी बाधा के देख सकूं। जब मैं एक ऐसे ही स्पॉट पर पहुंचा तो मेरे गाइड (जो चालक की भूमिका में भी था) ने धुंध की एक मोटी परत की ओर इशारा करते हुए कहा कि जब आसमान साफ होता है तो दूर से ही कंचनजंगा को धूप में नहाते हुए देखा जा सकता है। मैंने धुंध भरे क्षितिज को कई बार अपनी आंखों से भेदने का प्रयास किया, लेकिन अफसोस कि मैं नाकाम रहा, कंचनजंगा नहीं दिखा।

दिखे दिलकश नजारे: अगली सुबह मुझे नाथू ला जाना था। गाइड ने बताया कि भारी बर्फबारी की वजह से सड़क बंद हो गई है। नाथू ला जाने के लिए पर्यटक परमिट लेना पड़ता है। वह अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया गया। मेरी हॉलिडे योजना पर ठंडी बर्फ गिर गई। इससे अगले दिन मुझे बताया गया कि गुरुडोंगमार झील भी नहीं जाया जा सकता। सड़कों पर से बर्फ हटाने में कई दिन लगेंगे। मुझे मेरे मनचाहे नजारों के बजाय केवल सिक्किम के जाड़ों का अहसास मिल रहा था। गाइड के सुझाव पर मैंने उत्तरी सिक्किम में छोटे से टाउन लाचुंग जाने का प्लान बनाया। मेरे गाइड ने कहा, 'जब आप इतनी दूर आ ही गए हैं तो मैं आपको बर्फ दिखाए बिना नहीं जाने दे सकता।' हम एक पतली, नागिन की तरह लहराती पगडंडी पर पहाड़ की तरफ जाने लगे। जल्द ही ढलान पर कोनिफर (शंकुधर वृक्ष) दिखाई देने लगे। जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते गए पेड़ फ्रॉस्ट से मोटे होते चले गए। सड़क के दोनों किनारों पर और पहाड़ों पर कारपेट की तरह बर्फ जम गई थी। पूजा ध्वज फड़फड़ा रहे थे, शांत पुल के नीचे नदी बह रही थी।

अगली दोपहर मेरे होटल की खिड़की के बाहर की दुनिया अचानक धुंधली हो गई। हजारों रूई की गेंदें आसमान में तैर रही थीं। मुझे अपनी किस्मत पर विश्वास नहीं हो रहा था। मैं होटल के कमरे से बाहर निकल आया। एक सप्ताह की निराशा के बाद मैं स्नोफॉल देख रहा था। हर जगह बर्फ की मोटी परत जम चुकी थी। जब हम गंगटोक लौट रहे थे तो बर्फ के टुकड़े हमारी कार पर गिर रहे थे। गंगटोक से घर लौटने पर मैं सोचने लगा कि जो कार्यक्रम बनाया था, वह तो फेल हो गया, लेकिन जो अनिश्चित-अनपेक्षित देखने को मिला, वह सुंदर और यादगार था। *

सेल्फ इंप्रूवमेंट / कीर्तिशेखर

जिस तरह एक समय तक अच्छी जॉब-करियर के लिए पढ़ा-लिखा होना जरूरी होता था, आज के दौर में डिजिटल लिटरेसी का करियर ग्रोथ में बहुत ज्यादा महत्व हो गया है। इसकी इंपॉर्टेंस के बारे में जानिए।

करियर ग्रोथ के लिए जरूरी डिजिटल लिटरेसी

आज के दौर में अगर आप डिजिटली लिटरेट नहीं हैं, तो चाहे आपके पास जितनी डिग्रियां हों, चाहे जितने बुद्धिमान हों, करियर में ग्रो करना आपके लिए संभव नहीं होगा। आजकल तो करियर के मामले में लिटरेसी का मतलब ही हो गया है डिजिटल लिटरेसी।

क्या है डिजिटल लिटरेसी: डिजिटल लिटरेसी का मतलब, हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में सहायक विभिन्न तकनीकों के इस्तेमाल में दक्ष होना है। तकनीकी डिवाइसेस को समझना और इन प्लेटफॉर्म्स में काम करना आना भी सही मायने में डिजिटल लिटरेसी का मतलब है।

कई करियर ऑप्शंस तक पहुंच: अगर आप डिजिटल स्किल्स में माहिर हैं, तो आपके सामने विभिन्न तरह के करियर ऑप्शंस हर समय मौजूद रहेंगे। आप ज्यादा से ज्यादा विकल्पों तक आसानी से पहुंच सकते हैं। मसलन, डिजिटल मार्केटिंग, डेटा एनालिटिक्स प्रोग्रामिंग, ग्राफिक डिजाइन या कंटेंट क्रिएशन जैसे क्षेत्रों में आपके लिए भरपूर अवसर उपलब्ध रहेंगे। यही नहीं अगर आप वर्क फ्रॉम होम और गिग इकोनॉमिक्स से जुड़े हैं तो भी आपके लिए डिजिटल स्किल्स का होना बहुत जरूरी है।

बढ़ती है प्रोडक्टिविटी: अगर आप डिजिटली लिटरेट हैं तो विभिन्न तरह के डिजिटल टूल्स जैसे एक्सेल, सीआरएम सॉफ्टवेयर और गूगल वर्क स्पेस का इस्तेमाल करके अपने काम में तेजी और क्वालिटी ला सकते हैं। समय बचाने वाले उपकरण और सॉफ्टवेयर का सही उपयोग आपको कॉम्पिटिशन में आगे रखेगा और अगर आप डिजिटली एफिशिएंट नहीं हैं तो चाहे जितने पढ़े-लिखे हों और चाहे जितने इंटेलीजेंट हों, आपकी प्रोडक्टीविटी और एफिशिएंसी दोनों ही पीछे रह जाएंगी। टाइम सेविंग उपकरण और सॉफ्टवेयर का सही उपयोग आपको प्रतिस्पर्धा में आगे रखता है।

जॉब सर्च-नेटवर्किंग में सुविधा: अगर आप डिजिटल लिटरेट हैं तो लिंक्ड इन, ग्लास डोर और दूसरे जॉब प्लेटफॉर्म्स का उपयोग करके अपने लिए बेहतर से बेहतर जॉब्स खोज सकते हैं। डिजिटल नेटवर्किंग के जरिए आप अपने क्षेत्र विशेष के लोगों से जुड़कर अपने लिए नए-नए अवसर पैदा कर सकते हैं। साथ ही नवीनतम ट्रेंड्स और टेक्नोलॉजी से परिचित होने के कारण न सिर्फ आपका परफॉर्मेंस अपग्रेड रहता है बल्कि लोगों के बीच इज्जत भी ज्यादा मिलती है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, ब्लॉक चेन और अन्य एडवांस टेक्नोलॉजी में काम करने के लिए यह बेसिक स्किल बहुत जरूरी है।

सेल्फ एंप्लॉयमेंट में हेल्पफुल: अगर आप अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए वेबसाइट का उपयोग करना चाहते हैं, सोशल मीडिया मार्केटिंग का हिस्सा बनना चाहते हैं और ऑनलाइन पेमेंट पाने के लिए, पेमेंट गेटवे बनवाना चाहते हैं, तो आपको डिजिटली लिटरेट होना बहुत जरूरी है। आजकल ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर अपने प्रोडक्ट्स बेचना भी तभी संभव है, जब आप डिजिटली एक्सपर्ट होंगे।

अगर पीछे रह गए तो: अगर इतनी जरूरत साबित होने के बाद भी आप डिजिटल इलिटरेट रह जाते हैं तो इसका आपको अपने करियर में कई तरह से नुकसान उठाने पड़ सकते हैं। मसलन, डिजिटल स्किल्स न होने पर आपको जॉब से बाहर कर दिया जा सकता है। विशेषकर मार्केटिंग फाइनेंस के फील्ड में। डिजिटल उपकरणों का इस्तेमाल न करने पर अपने सहकर्मियों से परफॉर्मेंस में बहुत ज्यादा पिछड़ सकते हैं। डिजिटल लिटरेसी की कमी के कारण आपको अच्छी सैलरी वाली जॉब नहीं मिल सकती। खासकर जिन जॉब्स में आटोमेशन और टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल बहुत ज्यादा बढ़ गया है, वहां तो आपका टिकना भी मुश्किल हो सकता है। डिजिटल लिटरेसी न होने पर आपके साथ कई तरह के ऑनलाइन फ्रॉड कभी भी हो सकते हैं। *

ऐसे सुधारें डिजिटल लिटरेसी

कई तरह के उपलब्ध ऑनलाइन कोर्सेस मसलन यूडेमी, स्किल्स शेयर और कोरसेरा जैसे प्लेटफॉर्म्स का फायदा उठाएं। बेसिक कंप्यूटर स्किल्स से लेकर एडवांस टूल्स तक सब कुछ सीख सकते हैं, बशर्ते कोशिश करें। माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस के विभिन्न सॉफ्टवेयर जैसे वर्ड, एक्सेल, पावर प्वाइंट और गूगल वर्क स्पेस और वीडियो कांफ्रेंसिंग एप जैसे जूम, एमएस स्ट्रीम का अभ्यास करें। इसी तरह फेसबुक, इंस्टाग्राम और लिंक्ड इन जैसे प्लेटफॉर्म का उपयोग करें और एसईओ, पीपीसी और कंटेंट मार्केटिंग जैसे टूल्स सीखें। इसके अलावा साइबर सुरक्षा की समझ बढ़ाएं और रियल लाइफ में ज्यादा से ज्यादा डिजिटल लाइफ की प्रैक्टिस करें। मसलन, ऑनलाइन बिल पेमेंट करें, डिजिटल कैलेंडर का इस्तेमाल करें और ई-कॉमर्स साइट्स पर शॉपिंग करें। इन गतिविधियों से आप डिजिटली लिटरेट हो जाएंगे।

सिने-ट्रेंड / हेमंत पाल

शुरुआती दौर से ही बॉलीवुड में प्रेम आधारित कितनी ही फिल्में बनीं और जबर्दस्त सफल हुईं। लेकिन बीते कुछ वर्षों में ऐसी कई फिल्में भी खूब हिट हुईं, जिनमें प्यार का एंगल न के बराबर था, तो क्या मान लिया जाए कि लव-बेस्ड फिल्मों का जादू कम होने लगा है?

कम हो रहा लव-बेस्ड फिल्मों का जादू!

मोहब्बत की यादगार दास्तान 'मुगल-ए-आजम'

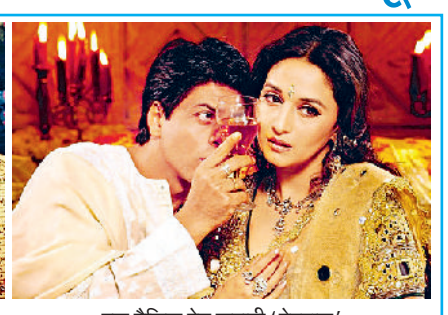

एक ट्रैजिक प्रेम कहानी 'देवदास'

प्रेम जीवन का ऐसा कोमल अहसास है, जिसे कहीं से भी मोड़कर उसे कथानक का रूप दिया जा सकता है। हिंदी फिल्मों की बात करें तो कई दशकों तक प्रेम, फिल्मों के लिए सबसे मुफीद विषय रहा। अब तक जितनी भी फिल्में बनीं, उनमें सबसे ज्यादा फिल्मों के विषय प्यार-मोहब्बत के इर्द-गिर्द ही घूमते रहे हैं।

फिल्मों में जरूरी तत्व रहा प्रेम: शुरुआती ब्लैक एंड व्हाइट के दौर से रंगीन फिल्मों तक में जो बात हर दौर में कॉमन रही, वो है-प्रेम कहानियां। फिल्मों की कहानी का आधार चाहे एक्शन हो, सामाजिक हो, कॉमेडी या फिर हॉरर, हर कहानी में कोई न कोई लव स्टोरी जरूर होती रही। देखा जाए तो अन्य विषयों पर बनी फिल्मों में भी कथानक को आगे बढ़ाने में प्रेम का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

लंबी है प्रेमाधारित फिल्मों की फेहरिस्त: हिंदी सिनेमा में अमर प्रेम कथाओं की फेहरिस्त काफी लंबी है। 'मुगले आजम', 'आवारा', 'कागज के फूल', 'प्यासा', 'साहिब बीवी और गुलाम', 'पाकीजा', 'कश्मीर की कली', 'आराधना', 'बॉबी', ' सि ल सि ला ', 'देवदास', 'मैंने प्यार किया', 'कयामत से कयामत तक', 'एक दूजे के लिए', 'दिल है कि मानता नहीं', 'लव स्टोरी', 'साजन', 'दिल', 'उमराव जान', '1942 ए लव स्टोरी', 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे', 'कुछ-कुछ होता है', 'रंगीला', 'कल हो न हो', 'जब वी मेट', ऐसी कितनी ही फिल्मों में प्रेम को प्रमुखता से दर्शाया गया है।

दर्शकों को खूब आए पसंद 'बजरंगी भाईजान'

नए दौर की फिल्मी लव स्टोरीज: समय बदलने के साथ जैसे युवाओं की सोच बदली, उनके प्यार करने का तरीका भी बदला। इसे भी फिल्मी पर्दे पर बखूबी दर्शाया गया। नई पीढ़ी के प्रेम के रंग-ढंग को दर्शाती फिल्मों में 'रहना है तेरे दिल में', 'बचना ए हसीनों', 'सलाम नमस्ते', 'लव आजकल', 'ये जवानी है दीवानी', 'वेकअप सिड', 'अजब प्रेम की गजब कहानी', 'रॉक स्टार', 'बर्फी', 'टू स्टेट्स', 'आशिकी-टू', 'कॉकटेल', 'शुद्ध देसी रोमांस', 'तनु वेड्स मनु', 'मसान', 'तमाशा', 'ऐ दिल है मुश्किल', 'बरेली की बर्फी' जैसी अनेक फिल्मों का जिक्र किया जा सकता है।

दर्शकों को पसंद आता प्यार का अहसास: फिल्मों का कथानक कितना भी नयापन लिए हो, उसका मोहब्बत से दूर-दूर तक वास्ता न हो, फिर भी उसमें एक प्रेम कहानी जरूर पनपती है। क्योंकि प्रेम जीवन की वो शाश्वत सच्चाई है, जिसे नकारा नहीं जा सकता। भारतीय दर्शक के जीवन में मोहब्बत के अलग ही मायने हैं और इन्हीं भावनाओं को वो हर पल जीता है। उसे 'मुगले आजम' की सलीम और अनारकली का इश्क कामयाब न होना उतना ही सालता है, जितना 'सदमा' में श्रीदेवी और कमल हासन का बिछड़ना! दरअसल, सामान्य जिंदगी में भी प्रेम कथाओं की कमी नहीं होती, पर दर्शक फिल्मों के जरिए अपनी मोहब्बत के अधूरे सपनों को जीता है। फिल्म बनाने वालों ने भी दर्शकों की इस कमजोरी को अच्छी तरह समझ लिया। फिल्मों के हर कथानक में एक लव स्टोरी यदि किसी फिल्म में प्रेम-प्रसंग था भी, तो महज कहानी को आगे बढ़ाने के लिए थे। 'बजरंगी भाईजान', 'सुल्तान', 'दंगल', 'रुस्तम', 'नीरजा', 'पिंक', 'कहानी', 'एयरलिफ्ट', 'निल बटे सन्नाटा', 'उड़ता पंजाब', 'एम.एस. धोनी' से लेकर 'काबिल' और 'जॉली एलएलबी-2' तक में प्रेम का एंगल न के बराबर रहा। रहा भी तो महज कथानक को आगे बढ़ाने के लिए। सलमान खान की 'बजरंगी भाईजान' और 'सुल्तान' दोनों ही फिल्मों में नायक-नायिका के बीच प्रेम तो दिखाया गया है, लेकिन ये फिल्में कहीं से भी प्रेम-कहानी नहीं है। अक्षय कुमार की 'रुस्तम' की कहानी का आधार कोर्ट केस ही रहता है। सोनम कपूर की फिल्म 'नीरजा' तो पूरी तरह एक एयर होस्टेस के कर्तव्य की कहानी है। वास्तव में प्रेम कहानी को हाशिए पर रखकर फिल्मों में कुछ नया, कुछ अलग दिखाने का ये ट्रेंड धीरे-धीरे आया और सफल भी हुआ। तो क्या ये मान लिया जाए कि हिंदी फिल्मों में मोहब्बत के कॉन्सेप्ट को लेकर दर्शकों में क्रेज नहीं रहा! ऐसी लवस्टोरीज हाशिए पर जा रही हैं! *

एयर होस्टेस के कर्तव्य की कहानी 'नीरजा'

इसलिए ही होती है। लेकिन लगता है अब धीरे-धीरे ये फार्मूला भी दरकने लगा। क्योंकि, नई पीढ़ी को ऐसी प्रेम कथाएं रास नहीं आती।

बदल रहे फिल्मों के विषय: लव स्टोरी बेस्ड फिल्मों के शानदार अतीत के बावजूद बीते कुछ सालों में आई कई फिल्मों के कथानकों में प्रेम नदारद था या न के बराबर था।